योनित्यमच्युत पदाम्भुज युग्मरुक्म व्यामोहतस्तदितराणि तृणाय मेने।
अस्मद्गुरोर्भगवतोऽस्य दयैकसिंधोः रामानुजस्य चरणौ शरणम् प्रपद्ये।।

श्रीपादरामानुजाचार्य तनियन - श्री कूरेश स्वामी द्वारा विरचित श्लोक

मैं अपने आचार्य, श्रीपाद रामानुजाचार्य का अभिवंदन करता हूँ, जो श्री अच्युत भगवान के चरणकमलों के प्रति अत्यन्त लगाव के कारण अन्य सभी वस्तुओं को तिनके के समान तुच्छ मानते हैं, और जो ज्ञान, वैराग्य, भक्ति इत्यादि गुणों से संपन्न हैं, और जो कृपा के सागर हैं।

श्री गुरु - परंपरा

कल्पायुषां स्थानजयात् पुनर्भवात्
क्षणायुषां भारतभूजयो वरम्।।

कहा गया है कि -ब्रह्मा के कल्प जितना जीवन जीने वाले देवगण बार-बार देवलोक में ही जन्म पाते हैं अर्थात् उनको मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती जबकि भारतभूमि में जन्म लेने वाले कीट-पतंग भी गुरुजनों के चरण रज से मोक्ष पा जाते हैं।

यहां की धरती में भगवान का नाम है, गुरुओं के उपदेशों की गूंज से यहां मानवता की स्थापना होती है।

हमारे श्री सद्गुरुदेव भगवान (वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज) ने इसी पावन धरती पर ग्राम पाड़ला (करौली, राजस्थान) के एक संपन्न ब्राह्मण परिवार में श्री सोहनपाल जी एवं माता श्रीमती मूली देवी जी के घर मनुष्य देह को धारण किया, जिन्होंने थोड़े ही समय में मानवता की राह पर लाखों लोगों को चलना सिखाया। मनुष्य स्वरूप को माध्यम बनाने वाले इन दिव्यात्मा ने बालपन से ही धार्मिक क्रियाकलापों में रूचि लेना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने अनेकानेक प्रकार की कठिन तपश्चर्याओं को कर श्री भगवान की कृपा प्राप्त की और धीरे-धीरे मानवता के संदेश के प्रचार-प्रसार के लिए एक संस्थान स्थापित कर दिया। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण उनके शिष्यों के विशाल समूहों को देखने से मिलता है।

उनका दिव्य व्यक्तित्व बड़े-बड़े राजाओं, महाराजाओं व देवगणों के रूप लावण्य को भी पीछे छोड़ता था। जिसपर उनकी एक नजर पड़ गई उसका जीवन धन्य हो गया, ऐसी तेजोमय दृष्टि। उन्होंने सम्पूर्ण मानव जाति को जाति-मजहब की संकीर्णताओं से ऊपर उठाकर केवल और केवल मानव होना सिखाया। उनके इस आंदोलन ने मानवता को नई राह और मजबूती प्रदान की। जातियों में बंटे समाज को एकसूत्र में बांधकर श्रीमन् नारायण की भक्ति में लगा दिया। ऐसी भक्ति में कि भक्त और भगवान के बीच कुछ भी शेष ना रह पाये।

बाबा के इस दिव्य तेज को संजोकर समस्त संसार को अध्यात्म के तेज से आलोकित कर रहे वर्तमान पीठाधीश्वर अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के चरित्र को भी शब्दों में नहीं बांधा जा सकता अपितु उनके दिव्य साकार कार्य अवश्य ही लोगों को जीवन जीने की कला सिखा रहे हैं।

अपने दिव्य आलोक से असंख्य जनों के हृदयों को प्रकाशित करने वाले, स्त्री-पुरूष को समान अवसर व स्थान समाज में दिलवाने वाले, असंख्य जनों को गृहस्थ जीवन में ही सन्यास का सुख प्रदान कराने वाले, केवल और केवल मानवता को एक धर्म व विचार स्थापित करने वाले, असंख्य भटकों को सही राह दिखाने वाले, आचार्य सम्प्रदाय को जन-जन तक पहुंचाने वाले, शुद्ध भक्ति मार्ग के प्रवर्तक व पवित्रता एवं सदाचार के बोधक श्री गुरु महाराज ही सब शिष्यों के लिए सर्वोच्च सत्ता हैं। वह भगवान का बोध कराने वाले होने से भी भगवान के पूर्व ही नाम लेने योग्य हैं।

हमारा सौभाग्य है कि हमें आचार्यकृपा प्राप्त हुई और हम श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम का आश्रय प्राप्त कर सके। हमसे पहले भी असंख्य ने यहां कृपा प्राप्त की और हमारे बाद भी असंख्य यहां कृपाएं प्राप्त करेंगे।

हमारे आचार्यश्री ऐसे आचार्य सम्प्रदाय के अभिन्न अंग हैं जिनके प्रवर्तक आचार्य भगवान् श्रीमन् नारायण ही हैं। श्री लक्ष्मी जी द्वारा जीवों के कल्याण की बात करने पर श्री भगवान ने उन्हें अष्टाक्षर मंत्र, द्वय मंत्र आदि सभी मंत्रों का रहस्य बताया। श्री लक्ष्मी जी ने इन रहस्यों को श्री विष्वकसेन जी को प्रदान किया। उन्होंने श्री शठकोप स्वामी को यह बताया, मुनिजी से श्रीनाथ मुनिस्वामी जी को यह प्राप्त हुआ। तदुपरांत श्री पुण्डरीकाक्ष स्वामी व उनके बाद श्री राममिश्र स्वामी जी को यह मंत्र प्राप्त हुए। श्री राममिश्र स्वामी जी से श्री यामुनाचार्य स्वामी जी को व उनके उत्तराधिकार को श्री महापूर्ण स्वामी जी ने संभाला, जिन्होंने श्री रामानुज स्वामी जी को यह मंत्र प्रदान किये।

आज आचार्य सम्प्रदाय को भाष्यकार रामानुज स्वामी जी के ही नाम पर रामानुज सम्प्रदाय के नाम से भी जाना जाता है। भाष्यकार रामानुज स्वामी जी ने श्रीभाष्य में लिखा है -

तर्काप्रतिष्ठानादपि।। 2.1.11

अर्थात् जो श्रुति सम्मत नहीं होता, उस तर्क की कोई प्रतिष्ठा नहीं होती। ऐसे में हम आपको जो गुरु परंपरा दिखा और बता रहे हैं वह श्रुति सम्मत भी है और प्रतिष्ठा योग्य भी है।

हमारे आचार्य एक श्रुतिसम्मत परंपरा में आए हैं, कोई मन्मना धर्म प्रतिष्ठित नहीं किए हैं। अतः यहां दिया जाने वाला संदेश प्रतिष्ठा योग्य है। ऐसा श्रीभाष्य द्वारा भी प्रतिष्ठित जान पड़ता है।

हमारे आचार्यश्री की वाणी में सभी सद्ग्रंथों का सरल भाषा में सार दे दिया गया है। सीधी और सरल भाषा में श्री गुरु महाराज कहते हैं कि उस (भगवान) पर विश्वास करके तो देखो, वो तुम्हारे सब दुख दूर कर देगा। मैं तुम्हारी वकालत करूंगा।

श्री महाराज द्वारा जीवमात्र के कल्याणार्थ ही श्री सिद्धदाता आश्रम की स्थापना की। इसी आश्रम परिसर में एक विशाल श्री लक्ष्मी नारायण दिव्य धाम (मन्दिर) की स्थापना कर एक शक्तिपीठ का उदय भी किया गया है। श्रीगुरु महाराज कहते हैं कि यहां अनन्त काल तक असंख्य जनों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती ही रहेगी। आचार्य सम्प्रदाय की कीर्ति बढ़ाने वाले श्री सद्गुरुदेव भगवान ने सर्व कार्यों को सिद्ध करने वाली मां सिद्धदात्री की शक्तियों को यहां स्थापित किया है। हमारी आपश्री से प्रार्थना है कि अपने जीवन के अमूल्य समय में थोड़ा समय निकालकर श्री गुरु परंपरा में स्थापित इस दिव्य गंगा में मानसिक स्नान करने अवश्य ही आइए।

Sudershanalok_2023_Pages_1-33_Layout 1 13-Mar-23 10:28 AM Page 3

श्रीमते रामानुजाय नमः श्रीं श्रियै नमः श्री गुरवे नमः

सुदर्शनालोक

स्मारिका | 2023

आशीर्वाद प्रदाता
वैकुण्ठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य
स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज

संरक्षक
अनन्त श्रीविभूषित इन्द्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर
श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज

परामर्श मण्डल
डी.सी. तंवर
जगदीश सोमानी

सम्पादक
शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'

डिजाइनिंग एवं फोटो
नवल किशोर शर्मा

प्रकाशक
श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)
जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट
बड़खल-सूरजकुंड मार्ग, सैक्टर-44, फरीदाबाद-121012 (हरियाणा) भारत
दूरभाष : 0129- 2419555, 9910907109
Follow us on: Facebook/Instagram/Twitter/YouTube - Shri Sidhdata Ashram
website : www.shrisidhdataashram.org - email: info@shrisidhdataashram.org

अनुक्रम.....

क्र.सं	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	गुरु परंपरा		2
2.	सम्पादकीय	शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'	5
3.	संदेश		6-33
4.	शरणागति और साक्षात्कार	वै. श्रीमद् ज.गु.रा.स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज	34-37
5.	मनुष्य के लिए नाम जप महा-औषधि है	श्रीमद् ज.गु.रा.स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी	38-41
6.	परम तत्त्व विष्णु	जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री राजनारायणाचार्य जी महाराज	42
7.	तिरुप्पावै दिव्यग्रन्थ का प्रतिपाद्य विषय	जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री श्रीधराचार्य जी महाराज	43
8.	सर्वोत्कृष्ट मानवीय गुण	महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री	44
9.	INDIA'S RESURGENCE IN THE 21ST CENTURY	Dr. Karan Singh	45-47
10.	विश्व में मानवता एवं अध्यात्म का प्रचार-प्रसार		48-49
11.	लौकिक कष्टों से मुक्ति प्रदान कर रहा है श्री सिद्धदाता आश्रम		50
12.	स्वस्थ व्यक्ति ही सदाचार को ग्रहण करता है		51
13.	संस्कृत और संस्कृति का प्रसार		52-53
14.	पुस्तकालय द्वारा ज्ञान प्रवाह		54
15.	भोजन प्रसादम् सेवा (अन्नक्षेत्र)		55
16.	वैकुंठवासी बाबा का स्मृति स्थल		56-57
17.	जनहित सेवा		58-59
18.	सेवा को पुरस्कार		60
19.	सेवा ही धर्म		61
20.	गौधन की सेवा		62
21.	भौतिक तापों से रक्षा करता है गुरुमंत्र		63
22.	आधुनिक समय की मांग है नवीकरणीय ऊर्जा		64-65
23.	श्री गुरु दर पर आए अतिथि हमारे ...		66-75
24.	समता मूर्ति की स्थापना पर जीयरस्वामी का आभार		76
25.	श्री गुरुमहाराज जी का संत विभूतियों संग मिलन		77-78
26.	प्रवास में श्री गुरु महाराज जी		79-81
27.	नवसंकल्प का पर्व		82-83
28.	फूलों और गुलाल संग खेली होली		84-85
29.	मर्यादापुरुषोत्तम रामजी का जन्मोत्सव (रामनवमी)		86
29.	भक्त शिरोमणि श्री हनुमान जयंती		87
30.	पंचदशम् ब्रह्मोत्सव		88-89
31.	भाष्यकार रामानुज भगवान की जयंती		90
32.	धूमधाम से मनाई श्रीनृसिंह जयंती		91
33.	महान तपस्वी श्री गुरु महाराज जी की पुण्यतिथि		92-93
34.	वै. बाबा की जयंती एवं आश्रम स्थापना दिवस		94-95
35.	आचार्य पूजन (श्री व्यास पूर्णिमा)		96-97
36.	श्रीगुरुमाता जी की तृतीय पुण्यतिथि		98-99
37.	धूमधाम के साथ मनाई श्रावण शिवरात्रि		100-101
38.	नन्द के आनन्द भयो, जय कन्हैया लाल की		102-103
39.	आद्या शक्ति का आराधना दिवस (दशहरा)		104-105
40.	दान की अक्षुण्ण परंपरा		106
41.	हर्ष उल्लास के साथ मनाई दीपावली		107-109
42.	सविधि संपन्न हुआ श्री गोवर्धन पूजन		110
43.	गोपाष्टमी पर्व पर गौधन पूजन		111
44.	गीता जयंती में श्री सिद्धदाता आश्रम ने की भागीदारी		112-113
45.	श्री सिद्धदाता आश्रम आने का मानचित्र		114
46.	श्री सिद्धदाता आश्रम - मुख्य पर्व एवं अन्य कार्यक्रम का अनुक्रम		115
47.	श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम - समय सारणी		116

सम्पादकीय

शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'
संपादक - श्री सुदर्शन संदेश (मासिक) एवं सुदर्शनालोक (वार्षिकी)

सरलतम मार्ग है भक्ति

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) से संबद्ध लाखों भक्त भगवान की भक्ति में रत हैं। परंतु मेरा मत है कि अध्यात्म का सुख लेने वालों को उसे अपने पास नहीं रखना चाहिए। उन्हें यह आगे बांटना चाहिए। श्री गुरु महाराज से प्राप्त शिक्षा को हमें अपनी क्षमता अनुसार प्रसार-प्रचार देने में कोई कंजूसी नहीं करनी चाहिए। दूसरे व्यक्ति को भगवान की भक्ति में लगने के लिये प्रेरित करना भी बड़ा पुण्य कहलाता है।

इसीलिए भक्ति का पद ज्ञान से भी बढ़कर बताया गया है। ज्ञान अज्ञान का नाश करता है जबकि भक्ति प्रेम की मात्रा में क्षण प्रतिक्षण बढ़ोत्तरी करती है। हृदय प्रेम से भर देती है। यह भक्त और भगवान को निकटता और निकटता फिर अभिन्नता प्रदान कर देती है। भगवान भी प्रेम के वशीभूत होकर, अपने शरणागत की कुशलक्षेम का ध्यान स्वयं रखने लगते हैं। वह अपने भक्त का कभी भी बुरा नहीं होने देते।

भगवान को ही स्मरण करता हुआ व्यक्ति इस मृत्युलोक पर सद्कर्मों को करता हुआ परमलोक को प्राप्त होता है। यानि मोक्ष प्राप्ति करता है। महाभारत में कहा गया, गीता में कहा गया कि भगवान के नाम का जाप करने वाला मोक्ष को प्राप्त होता है और वह बार-बार अनेकानेक गर्भों की यात्रा से बचकर श्रेष्ठ जीवन- उस प्रभु के सान्निध्य में जीता है।

एक बार मन से शरणागत हो जायें। बाकी का कुशलक्षेम पूछना, करना उन परम दयालु भगवान का विषय हो जाता है।

ऐसी शरणागति जैसी मीरा ने ली-

'मेरो तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।

केवल इतने भर से वह भगवान की और भगवान उसके हो गये। केवल नाम लेने से लेकिन उस नाम लेने में है भाव। भाव जो आम इंसान को मीरा बना दे। ऐसा भाव रखो कि सबकी सेवा करूंगा लेकिन आशा नहीं रखूंगा। सेवा के बदले सेवा की अथवा अन्य किसी वस्तु की आशा की तो सब व्यर्थ है। भगवान के नाम पर सेवा करना ही सर्वोत्तम है। ध्यान रखें कि जीवन जीने के लिये किये कर्मों की बात नहीं हो रही है। यह है अध्यात्म की बात। अध्यात्म जिसमें एक गुरु हैं, एक भगवान हैं, सत्संग है और है मानवता। पूरी मानव जाति इसी के आस-पास घूमती है। इसकी रचना ही इस प्रकार से की गई है। जैसे बेर के पेड़ पर बेर ही आएंगे आम नहीं आते उसी प्रकार मानव का गहना मानवता ही है अन्य कुछ नहीं। श्री भगवान ने गुरु की महिमा को बताते हुए कहा है-

'स महात्मा सुदुर्लभः' (गीता 7/19)

और अपने लिए कह रहे हैं- 'तस्याहं सुलभः' (गीता 8/14) गुरुजनों को दुर्लभ और स्वयं को सुलभ कह रहे हैं। लेकिन कब होंगे सुलभ जब उनकी शरणागति लोगे और शरणागति देने वाले हैं गुरुजन। गुरु ही बताते हैं संसार और भगवान का अन्तर, वही बताते हैं शरीर और आत्मा का अन्तर। संसार और शरीर एक ही हैं और आत्मा और भगवान एक हैं। यह स्पष्ट जान लेना चाहिए कि जो हम हैं वह आत्मा हैं, परमात्मा की सन्तान, उनका ही अंश। शरीर नहीं हैं। शरीर तो पांच सांसारिक पंचों का रूप है। 'पंच रचित अति अधम सरीरा' कहा मानस ने। शरीर को अधम कहा है। इसका कोई मोल नहीं बताया। मोल बताया है विवेक का। इस शरीर का उपयोग ही तब है जब इसमें विवेक का वास हो।

इस शरीर के प्रयोग से नरक-स्वर्ग और मोक्ष किया जा सकता है। सदुपयोग और दुरूपयोग का भेद बताने वाले भी गुरुजन ही हैं। यह भेद जानने वाले जान जाते हैं कि क्या कर्त्तव्य हैं और क्या अकर्त्तव्य। क्या सार है और क्या असार है, क्या नित्य है और क्या अनित्य है, क्या ग्रहण करना है और क्या त्यागना है। ऐसा भेद जानने वाला व्यक्ति वास्तव में मानव सेवा और भगवान का नाम लेता हुआ मोक्ष पाता है। ध्यान रखना है कि आत्मा ही यह भेद-विभेद जानती है, शरीर नहीं। क्योंकि इस शरीर में तो कुछ भी शुद्धता नहीं है। यह तो मल-मूत्र की फैक्ट्री है। तो फिर इसे सर्वसुंदर क्यों कहा गया?

इसलिये कहा गया क्योंकि इसका बेहतर सदुपयोग किया जा सकता है। अन्य शरीरों के द्वारा उतना बेहतर कार्य नहीं कर सकते जितना बेहतर हम मनुष्य शरीर के द्वारा कर सकते हैं। इसकी बनावट अन्य शरीरों से सुगम है, इसलिये कहा गया है सुंदर। नहीं तो सभी शरीर मल-मूत्र की ही फैक्ट्री हैं।

लेकिन यह शरीर कुछ समय के लिए ही मिला है। इसका सदुपयोग करो तो मोक्ष, दुरूपयोग करो तो अनेकानेक योनियों का नर्क। मर्जी सबकी अपनी-अपनी।

बार-बार बर मागउँ हरिष देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग।।

ऐसा कहते हैं भगवान शंकर। जिनके लिऐ कुछ भी असंभव नहीं फिर भी भक्ति और सत्संग मांग रहे हैं। क्योंकि क्योंकि- 'सर्वतः पाणिपादम्' (गीता 13/13)। भगवान् के चरण कमल हर जगह हैं जहां भी भजो, वहीं भगवान् प्रकट हो जाते हैं।

Srimathe Narayanaya Namaha Jai Srimannarayana Srimathe Ramanujaya Namaha

SRI RAMANUJA SAHASRABDI

Mangalasasanams
H.H Tridandi Chinna Srimannarayana Ramanuja Jeeyar Swamiji

मङ्गलाशासन

प्रिय श्रीमान् पुरुषोत्तमाचार्य स्वामीजी महाराज!

प्रातःस्मरणीय अपने आचार्य के द्वारा प्रवर्तित सन्मार्ग - सत्सम्प्रदाय एवं विभिन्न आध्यात्मिक तथा सामाजिक सेवाओं का आप अपने परिजनों के साथ में सुचारु रूप से संचालन कर रहे हैं । पिताजी ने दीन दुःखियों के लिए बहुत उपकार किया है । वे आज भी तेजोमूर्ति के रूप हम सबलोगों के समक्ष विराजमान हैं । उन के उदार हृदय को समझकर आपलोग, निरन्तर सेवा कर रहे हैं । यह प्रशंसनीय विषय है ।

भगवद्रामानुजस्वामीजी की कृपा से आगे भी निर्विघ्न सेवाएँ चलती रहेंगी । संस्था की गति - विधियों की जानकारी कराते हुए विद्वज्जनों के मार्मिक लेखों के साथ प्रतिवर्ष स्मारिका का प्रकाशन करके आप अपने आचार्य के यश को चिरस्थायी बनाते हुए उन का मुखोल्लास कर रहे हैं । जिस से हमें अत्यन्त प्रसन्नता होरही है ।

पूज्य पिताश्री की उपकार - परम्परा को आप निरन्तरता प्रदान कर रहे हैं । यह पावन श्रृङ्खला, निरन्तर चलती रहेगी । आप सबलोगों को हम अनेकानेक मङ्गलाशासन कर रहे हैं ।

अनेकानेक मङ्गलाशासन ।

जय श्रीमन्नारायण !

Sriramanagar , Palamakula post, Shamshabad, R.R Dist, Telangana- 509325, INDIA
Cell : 9553549971/72 , 733 075 4646 email: sriramanujasahasrabdi2017@gmail.com
Website : statueofequality.org , chinnajeeyar.org

Sudershanalok_2023_Pages_1-33_Layout 1 13-Mar-23 10:28 AM Page 7

।। श्री ।।
।। श्रीमते रामानुजाय नमः ।। ।। श्री वादिभीकर महागुरवे नमः ।।
श्री श्रीनिवास वेंकटेश्वर तिरुपतिबालाजी भगवान के दिव्यश्रीपादुका सेवक :-
श्री श्री जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी राजनारायणाचार्य जी
अध्यक्ष
श्री लक्ष्मी वेंकटेश्वर देवस्थानम्
भक्ति वाटिका, रामानुजाचार्य मार्ग, कसया रोड, देवरिया-274 001 (उ० प्र०) दूरभाष : (05568) 241479
ईमेल : bhaktivatika@gmail.com, वेब : www.bhaktivatika.com

क्रमांक ..... दिनांक : 16.12.2022

"मंगलाशासन पत्र"

श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम अपने नाम अनुरूप ही लोककल्याण के कार्यों में संलग्न है। आश्रम की स्थापना करने वाले सिद्धपुरूष श्री 1008 जगद्गुरू रामानुजाचार्य हरियाणा एवं इन्द्रप्रस्थ पीठाधीश्वर स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज के साथ मेरा व्यक्तिगत परिचय रहा है। बहुत सरल परंतु विद्वान वक्ता संत के रूप में उनकी विश्व में है। गद्दीनसीन श्री 1008 जगदगुरू रामानुजाचार्य हरियाणा एवं इन्द्रप्रस्थ पीठाधीश्वर स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से जनहित के कार्यों में अहर्निश भाव से रत् हैं। वह विद्या, विनय सम्पन्न सहज, मृदुभाषी एवं अपने पूर्व के आचार्य की तरह 'सिद्ध' हैं।

इस महिमाशाली संस्था द्वारा प्रकाशित हो रही **'सुदर्शनालोक' स्मारिका 2023** लोकोपकारी सिद्ध होगी। यही मंगलाशासन करते हुए भगवान से प्रार्थना करता हूं कि स्मारिका भविष्य में भी सम्पूर्ण विश्व को आदर्श जीवन जीने की शिक्षा देती रहे।

'इति शम्'

(जगद्गुरु रामानुजाचार्य
स्वामी श्री राजनारायणाचार्य जी महाराज)

Sudershanalok_2023_Pages_1-33_Layout 1 13-Mar-23 10:28 AM Page 8

श्रियैनमः
श्रीमते रामानुजाय नमः

अशर्फी भवन पीठाधीश्वर जगद्गुरू रामानुजाचार्य

स्वामी श्री श्रीधराचार्य जी महाराज

श्री अशर्फी भवन, अयोध्या जी (उ.प्र.) 224123

अध्यक्ष एवं संचालक

- श्री मधुसूदन धर्म सेतु ट्रस्ट
  अयोध्या जी
- श्रीधर सेवा ट्रस्ट
  अयोध्या जी
- अयोध्या विद्या पीठ
  करमडांडा-बारून बाजार
  जिला अयोध्या (फैजाबाद) उ.प्र.
- श्री माधव भवन
  अयोध्या जी
- श्री अनादि ब्रह्म संस्कृत विद्यालय
  अयोध्या जी
- माधव वेद विद्यालय
  अयोध्या जी
- श्री मधुसूदन निःशुल्क छात्रावास
  अयोध्या जी
- निर्माणधीन वेंकटेश भवन
  अयोध्या जी
- श्री हनुमान मंदिर
  करमडांडा-अयोध्या
- श्री माधव गौशाला
  अयोध्या जी
- श्री शान्ती भवन
  रायगंज-अयोध्या
- श्री सांवरिया सेठ मंदिर
  बड़वानी, म.प्र.
- श्री वेंकटेश मन्दिर
  बेगमगंज (म.प्र.)
- रामजानकी मंदिर
  कहतरवा

क्रमांक 1112 दिनांक : 06.01.2023

"मंगलाशासन पत्र"

सादर जय श्रीमन्नारायण!

श्री संप्रदाय की विशिष्टतम् पीठ श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम फरीदाबाद, हरियाणा के पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वमी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में संस्थान के द्वारा जनहित में अनेक सेवा कार्य सुचारु रूप से संचालित हो रहे हैं। वैकुंठवासी परम पूज्य श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज ऐसे सिद्धपुरुष थे जिनका दिव्य सान्निध्य आज भी संस्था एवं देश-विदेश के भक्त जनों को अनुभव होती रहती है। संस्था के उत्तरोत्तर उत्कर्ष हेतु प्रभु श्रीराम जी के श्रीचरणों में कोटिशः प्रार्थना है।

भावत्कः

श्रीधराचार्य

श्रीधराचार्य

सम्पर्क सूत्र : 9455002777, 8303594463, 9450942845
E-mail : ashartibhawanoffice@gmail.com

॥श्रीःकृपा॥

Master Seat, Juna Akhada :
HARIHAR ASHRAM
Pare Ka Mandir, Kankhal, Haridwar - 249 408 (Uttarakhand) India
Phone : + 91 1334 246974, Fax : +91 1334 246973

Swami Avdheshanand Giri
His Holiness "Junapeethadhishwar Acharya Mahamandleshwar", D.Lit
Head Of Juna Akhada (India 's Ancient -Oldest & Largest Spiritual-Religious Organization Which has millions of Naga Sadhus & Sanyasis)

Chairman
Hindu Dharma Acharya Sabha
The voice of Collective Consciousness
Apex forum of All Hindu Spiritual & Religious leaders

President
Bharat Mata Mandir
Samanvaya Sewa Trust
Bharat Mata Mandir,
Saptsarovar Marg,
Haridwar-249410 Uttarakhand ,India
Phone: 01334- 260256, 326190
Fax: 01334- 260981
e-mail : bharat.samanvaya@yahoo.in

Founder:
Prabhu Premi Sangh Charitable Trust
Prabhu Prem Ashram, Jagadhari Road,
Ambala Cantt. 133 006 (Haryana) INDIA
Phones : +91 171 2699335
Fax : +91 171 2699367
website : www.prabhupremisangh.org
e-mail : pps.ambala@gmail.com,
prabhuprem@hotmail.com

शुभकामना सन्देश

दिनांक – 03 फरवरी, 2023

प्रिय आत्मन्,

श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य पूज्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज,
अधिपति – श्रीलक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)
सादर ॐ नमो नारायणाय !

अत्यंत हर्ष का विषय है कि **जनहित सेवा चेरिटेबल ट्रस्ट** जनकल्याण हेतु श्रीलक्ष्मीनारायण दिव्यधाम, श्री सिद्धदाता आश्रम, श्रीनारायण गौशाला, स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद–वेदांग संस्कृत महाविद्यालय आदि के माध्यम से अनेक प्रेरणादायी व लोकोपकारी कार्य कर रही है। इसी क्रम में संस्था द्वारा **"सुदर्शनलोक–स्मारिका वर्ष 2023"** के नये वार्षिक अंक का प्रकाशन भी हो रहा है।

सेवा से अहमन्यता का नाश होता है और पवित्र अंतःकरण की निर्मिति होती है। अतः सेवा साधन नहीं, अपितु समस्त आध्यात्मिक साधनों की फलश्रुति है। सेवा परमात्मा को रिझाने का अचूक साधन है, जो सेवा और पारमार्थिक कार्यों में संलग्न हैं वही परमात्मा के प्रिय हैं। देश के सुदूर और दुर्गम क्षेत्रों में कार्यरत सभी सेवाव्रती परमात्मा के प्रतिनिधि ही है। वृक्ष, धरती, अम्बर, अग्नि, जल, पवन प्रकाशादि के रूप में परमात्मा स्वयं भी सेवा और परमार्थ के कार्यों में लगा है। इसलिए सत्कर्मों के प्रकाशन से समाज को नई दिशा मिलती है।

सेवा–सुसंस्कार और पारमार्थिक वृत्तियाँ भारतीय संस्कृति की वृहत्तर अभिव्यक्तियाँ हैं। सेवा से अहमन्यता का क्षरण–व्यक्तित्व का परिष्करण और सद्प्रवृत्तियो का प्रकाशन होता है। यह सर्वविदित है कि पूज्य महाराजश्री जी की सद्प्रेरणा से राष्ट्र जागरण के अन्तर्गत अनेक आध्यात्मिक एवं सेवा के प्रकल्प संचालित हैं। **जनहित सेवा चेरिटेबल ट्रस्ट** देशभर में अत्यंत श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण कार्य कर रही है।

इस वार्षिक विशेषांक **"सुदर्शनलोक–स्मारिका वर्ष 2023"** के प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(स्वामी अवधेशानन्द गिरि)
जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामण्डलेश्वर

AvdheshanandG AvdheshanandG_Official

शुभकामना संदेश

जानकर हर्ष हुआ कि श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा अपनी वार्षिकी सुदर्शनालोक-2023 का इस वर्ष भी प्रकाशन हो रहा है। हमें विश्वास है कि पत्रिका की सार्थकता सनातन धरोहर के प्रचार व प्रसार में सिद्ध होगी। जिससे धर्मप्रेमी जन लाभ उठावेंगे।

वैकुण्ठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज द्वारा स्थापित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम अपनी विशिष्ट भूमिका निभा रहा है। यह स्थान अति पावन व चमत्कारिक है। वर्तमान में श्रद्धेय श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के पावन सानिध्य एवं कुशल मार्गदर्शन में श्री गुरु महाराज जी की शिक्षाओं को असंख्य भक्तगणों तक पहुंचाकर उन्हें मोक्ष के सरल मार्ग पर ले जा रहे हैं।

इस आलौकिक कार्य को निष्पादित करने के लिये मैं सभी आश्रम बंधुओं को मंगलाशासन करता हूँ।

शुभमस्तु!

श्री उदासीन कार्ष्णि आश्रम,
श्री रमणरेती धाम, महावन 281305 (गोकुल), जिला-मथुरा दूरभाष : (05661) 272225, 272065

Sudershanalok_2023_Pages_1-33_Layout 1 13-Mar-23 10:28 AM Page 11

शुभकामना संदेश

संत भारतीय सांस्कृतिक-अध्यात्मिक परंपरा की जीवंत प्रेरणा हैं। भारतीय अस्मिता का गौरव हैं। संत- अनेकानेक विकट एवं विषम स्थितियों में भी भारतीय परंपरायें अक्षुण्णता बनी रही-इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका संतों की ही रही। पूज्य जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज ऐसी ही परंपराओं के दिव्य संत, जिन्होंने इस समूचे क्षेत्र में भारतीय अध्यात्म को जनसाधारण की सहज-सुलभ प्रेरणा बनाया।

उन्हीं के सत्संग-सेवा, संस्कृत एवं संस्कृति के प्रचार प्रसार के संकल्पों को समर्पित संकल्पित निष्ठा के साध सतत् आगे बढ़ने का स्तुत्य सत्यप्रयास कर रहे हैं। उन्हीं के कृपा पात्र पूज्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज जिनके कुशल मार्गदर्शन में न केवल सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम का गौरव बढ़ा है अपितु जनहित सेवा चैरीटेबल ट्रस्ट के माध्यम से ढ़ेरों सेवा प्रकल्प गतिमान हैं। सुदर्शनालोक स्मारिका के रूप में संस्था गौरव, राष्ट्र गौरव के रुप में समूची मानवता की सद्भावनामय प्रेरणा बने।

हार्दिक शुभेच्छा।

शभेच्छु
(गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द)

श्री कृष्ण कृपा धाम
परिक्रमा मार्ग, श्रीवृन्दावन (मथुरा) 281121 (8899363611/22)
Email: gieogita@gmail.com, Website : gieogita.org

ओ३म्
पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट)
Patanjali Yogpeeth (Trust)

क्रमांक
S.No. : .....

दिनांक
Dated : 24.11.2022

शुभकामना संदेश

भारतीय शिक्षा-चिकित्सा को गुलामी की निशानियों से मुक्ति दिलाने का कार्य साथ ही सनातनी विरासत के लिए गौरव के नूतन शोध का समागम कर नवीन अनुसंधान करने का गौरव पतंजलि द्वारा स्थापित किया जा रहा है। जिससे ऋषि संस्कृति पुनः पूरे विश्व में प्राचीन भारतीय संस्कृति की पताका फहराने के प्रति संकल्पित है।

जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट भी श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम तथा श्री सिद्धदाता आश्रम के माध्यम से भारतीय संस्कृति, वैदिक शिक्षा, सनातन धर्म की स्थापना के लिए निरन्तर पुरुषार्थ कर रहा है। साथ ही साथ संस्कृति की रक्षा, संस्कृत के प्रचार-प्रसार, स्वास्थ्य सेवाओं, गौशाला-संवर्धन, पौधा रोपण, स्वच्छ पर्यावरण, निःशुल्क भोजन की सेवा आदि कार्यों में सक्रिय भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

अति हर्ष का विषय है कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट अपनी वार्षिक स्मारिका **'सुदर्शनालोक-2023'** का प्रकाशन करने जा रहा है। आशा है सुदर्शनालोक सदैव समाज में धर्म, अध्यात्म,कला, साहित्य, प्राचीन संस्कृति व सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। वार्षिक स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी बहुत-बहुत मंगलकामनाएं।

(स्वामी रामदेव)
अध्यक्ष

सम्पर्क कार्यालय : महर्षि दयानन्द ग्राम, दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग, निकट बहादराबाद, हरिद्वार-249405, उत्तराखण्ड (भारत)
Admin Office : Maharishi Dayanand Gram, Delhi-Haridwar National Highway, Near Bahadrabad, Haridwar-249405, Uttarakhand, India
Tel. : 01334-240008, 244107, 248888 Fax : 01334-244805, 240664 E-mail : divyayoga@divyayoga.com Web : www.divyayoga.com

श्री गणेशाय नमः

जय बागेश्वर धाम

बागेश्वर धाम सरकार

Registration No.
06/12/02/13545/20
Mob. no - 8120592371

श्री बागेश्वर जन सेवा समिति

ग्रामः- गढ़ा, पोस्ट - गंज, जिला - छतरपुर (म.प्र.)

दिनांक 22.02.2023

शुभकामना संदेश

जैसा कि विदित है श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम की स्थापना श्री श्री 1008 अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज द्वारा हुई थी। स्वामीश्री जी ने जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) द्वारा जनहित में मानवमात्र की सेवा का दृढ़ संकल्प लिया था। ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क वेद विद्यालय, औषधालय, पुस्तकालय सभी के लिए प्रतिदिन भोजन, श्री नारायण गौशाला, आश्रम एवं मंदिर की व्यवस्था बहुत ही सुन्दर ढंग से की जा रही है। पंतजलि योगपीठ भी देश व समाज हित के इन सभी कार्यों को लेकर पहले से कार्यरत है।

यह हर्ष एवं गौरव का विषय है कि अत्यन्त सरल स्वभाव, विनय, सम्पन्न, मृदुभाषी वर्तमान पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज जनकल्याण व समाजोत्थान के इन कार्यों का निर्वहण पूरी लगन व विश्वास के साथ कर रहे हैं। ईश्वर उन्हें समुचित शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करें।

हमें प्रसन्नता है कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा अपनी वार्षिक स्मारिका सुदर्शनालोक वर्ष-2023 का प्रकाशन किया जा रहा है। हमें विश्वास है कि ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित सुदर्शनालोक स्मारिका में प्रकाशित लेखों से समाज को एक नई चेतना मिलेगी, विशेषकर नौजवानों को धार्मिक परम्परा, लोक मान्यताओं, देश प्रेम और संस्कृति से जोडने का कार्य यह स्मारिका करेगी। पतंजलि योगपीठ इस तरह के प्रयासों का सदैव स्वागत करता है।

हम सुदर्शनालोक स्मारिका-2023 के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।

।। गायत्री विजयतेतराम् ।।

सम्पर्क सूत्र : 9463600003

श्री पंच अग्नि अखाड़ा

(अधिनियम 21 सन् 1860 अतर्गत पंजीकृत संख्या 1166/65-66)

श्री श्री 108 तपोनिष्ठ अग्निहोत्री
श्री महन्त सम्पूर्णानन्द ब्रह्मचारी
सचिव

मुख्य केन्द्र -
11/30 सी, नया महादेव, राजघाट,
वाराणसी - 221001 (उत्तर प्रदेश)

क्रमांक.....

दिनांक.....

जानकर अति प्रसन्नता हुई कि फरीदाबाद में जनहित सेवा चैरिटबल ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिकी **'सुदर्शनालोक-2023'** का प्रकाशन करने जा रहा है। जिसमें संस्था की गतिविधियों सहित समाज उपयोगी लेखों का भी संग्रह होता है। श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के कुशल नेतृत्व में आश्रम द्वारा चलाई जा रही विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों के बारे में जानकर अभिभूत हूं और इनके निरंतर प्रगति की कामना करता हूं। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आश्रम द्वारा एक विशाल गौशाला का संचालन किया जाता है वहीं संस्कृत और संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए एक महाविद्यालय भी चलाया जा रहा है जिसमें बच्चों को शास्त्री तक निःशुल्क शिक्षा के साथ आवासीय सुविधाएं भी दी जाती हैं। आश्रम द्वारा संचालित पर्यावरण, समाज कल्याण की अन्य गतिविधियों में वृक्षारोपण, वस्त्र वितरण, स्वास्थ्य सुविधाएं आदि भी असमर्थजनों को सहर्ष प्रदान की जाती हैं।

संस्था निःसंदेह प्रशंसा की पात्र है।

मैं समझता हूं कि धार्मिक संस्थाएं यदि इस प्रकार की गतिविधियों को बढ़ावा दें तो समाज से अनेक बुराइयों को समाप्त किया जा सकता है।

मैं संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति और सुंदर एवं जन उपयोगी वार्षिकी **सुदर्शनालोक-2023** के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता हूँ।

धन्यवाद।

भवदीय
श्री श्री 108 तपोनिष्ठ अग्निहोत्री
श्री महन्त सम्पूर्णानन्द ब्रह्मचारी
सचिव :
श्री पंच अग्नि अखाड़ा

अमित शाह
AMIT SHAH

गृह मंत्री
भारत
HOME MINISTER
INDIA

Message

I am happy to note that Janhit Sewa Charitable Trust, Shri Siddhdata Ashram, Faridabad (Haryana) is bringing out its annual issue of **"SUDARSHANALOK-Smarika Varsh 2023"** with the aim to provide Socio-academic-religious literature in the larger interest of the mankind and to ensure harmony in the world.

The outstanding work of Shri Siddhdata Ashram operated by Janhit Sewa Charitable Trust, in the field of religious, social, environmental activities is undoubtedly laudable.

I convey my best wishes to the publication of annual issue of **"SUDARSHANALOK-Smarika Varsh 2023".**

(Amit Shah)

Office : Ministry of Home Affairs, North Block, New Delhi-110001
Tel. : 23092462, 23094686, Fax : 23094221
E-mail : hm@nic.in

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH

सत्यमेव जयते

रक्षा मंत्री
भारत
DEFENCE MINISTER
INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि फरीदाबाद में जनहित सेवा चैरिटबल ट्रस्ट, फरीदाबाद (हरियाणा) द्वारा विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी सुदर्शनालोक-2023 नामक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है।

मैं स्मारिका से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इसके सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(Rajnath Singh)

Office : Room No. 104, Ministry of Defence, South Block, New Delhi-110011
Tel. : +91 11 23012286, +91 11 23019030, Fax : +91 11 23015403
E-mail : rmo@mod.nic.in

कलराज मिश्र
राज्यपाल, राजस्थान

Kalraj Mishra
Governor, Rajasthan

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा अपनी वार्षिकी '**सुदर्शनालोक**' का प्रकाशन किया जा रहा है।

जनहित के लिये आपके ट्रस्ट द्वारा किये जा रहे कार्य अनुकरणीय हैं। धर्म, अध्यात्म के साथ सेवा से जुड़े प्रकल्प ही व्यक्ति को और समाज को उत्कृष्टता की ओर ले जाते हैं। हमारे यहां परमार्थ के कार्यों पर इसीलिये जोर दिया जाता है कि इससे जीवन धन्य होता है। आपकी गतिविधियों के बारे में जानकर सुखद लगता है, विश्वास है कि ऐसे ही परमार्थ के कार्य भविष्य में भी सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम के जरिये सतत् जारी रहेंगे। मेरा प्रणाम स्वीकारें।

प्रकाश्य स्मारिका के लिये हार्दिक शुभकामनाएं।

(कलराज मिश्र)

राज भवन, सिविल लाइन्स, जयपुर–302006
Raj Bhawan, Civil Lines, Jaipur-302006
दूरभाष : 0141–2228716–19, 2228611–12, 2228722

Sudershanalok_2023_Pages_1-33_Layout 1 13-Mar-23 10:28 AM Page 18

मनोहर लाल
MANOHAR LAL

सत्यमेव जयते

मुख्य मन्त्री, हरियाणा,
चण्डीगढ़।
CHIEF MINISTER, HARYANA,
CHANDIGARH.

Dated 25-11-2022

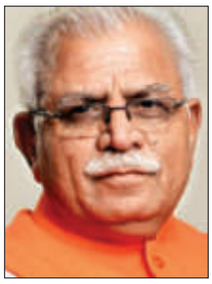

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद अपनी वार्षिक पत्रिका के नये अंक **'सुदर्शनालोक-स्मारिका वर्ष 2023'** का प्रकाशन कर रहा है।

भारत की पावन धरा सदियों से ऋषियों तथा संत-महात्माओं की जन्म-स्थली एवं तपोभूमि रही है। इतिहास इस बात का भी गवाह है कि हमारे समाज के विकास और उत्थान में आध्यात्मिक संतों और मुनियों का विशेष योगदान रहा है। इन दिव्यात्माओं के कारण ही भारत विश्व का आध्यात्मिक गुरु रहा है। आज भी विश्व के कोने-कोने से लोग हमारी प्राचीन संस्कृति व अध्यात्मिक धरोहर की जानकारी लेने आते हैं।

मुझे इस बात का गर्व है कि हरियाणा सरकार ने पिछले छः वर्षों से पवित्र गीता के संदेश को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुचाया है। कुरुक्षेत्र में हर वर्ष अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव मनाया जाता है और देश-विदेश से लाखों लोग गीता ज्ञान लेने कुरुक्षेत्र की पावन धरती पर आते हैं।

जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट संचालित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम अपने संस्थापक स्वामी सुदर्शनाचार्य के सिद्धांतों और आदर्शों का समाज में प्रचार-प्रसार कर रहा है। आशा है कि ट्रस्ट अपनी धार्मिक, शैक्षणिक तथा सामाजिक गतिविधियों को भविष्य में भी ऐसे ही जारी रखेगा।

मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिये अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

मनोहर लाल

(मनोहर लाल)

Office : 4th Floor, Haryana Civil Secretariat, Chandigarh - 160001, Ph. 0172-2749396, 0172-2740995 (Fax)
Resi. : H.No. 1, Sector-3, Chandigarh - 160001, Ph. 0172-2749394, 0172-2740596 (Fax)
email : cmharyana@nic.in

मुख्य मंत्री
राजस्थान

मुम.// सन्देश / औएसडीएफ / 2021
जयपुर, 18 नवम्बर, 2022

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम फरीदाबाद (हरियाणा) के जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट की वार्षिकी **सुदर्शनालोक स्मारिका वर्ष 2023** का प्रकाशन किया जा रहा है।

धर्म, संस्कृति, दर्शन, कला, साहित्य, अध्यात्मिक अनुष्ठान, वेद-वेदांग शिक्षा एवं संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार के साथ स्वास्थ्य सेवाओं, गोपालन, पर्यावरण संरक्षण और समाज सेवा के लिये संकल्पबद्ध संस्था द्वारा स्मारिका का प्रकाशन अपने आप में महत्वपूर्ण है।

आशा है कि स्मारिका की सामग्री इस सेवाभावी संस्था की रचनात्मक गतिविधियों, उपलब्धियों और भावी योजनाओं की जानकारी कराने वाली होगी।

मैं अधिपति श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रद्धेय स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी को श्रद्धापूर्वक नमन करते हुये इस प्रकाशन की सफलता के लिये अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

अशोक गहलोत

अरविन्द केजरीवाल
मुख्यमंत्री

सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार
दिल्ली सचिवालय, आई०पी०एस्टेट,
नई दिल्ली-110002
ऑफिस-23392020, 23392030
फैक्स - 23392111

अ.शा. पत्र संख्या : Csdcmi/133
दिनाँक 20-11-2022

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद द्वारा पूर्व वर्षों की भांति वर्ष 2023 का भी वार्षिक स्मारिका 'सुदर्शनालोक' का प्रकाशन किया जा रहा है।

यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि स्मारिका सुदर्शनालोक में संतों, धर्माचार्यों, विद्वानों एवं जनसेवकों के संदेश एवं विचारों का संकलन होता है। आशा है, स्मारिका ट्रस्ट द्वारा किए गए कार्यकलापों और गतिविधियों की विस्तृत जानकारी अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने में उपयोगी सिद्ध होगी।

स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद,

(अरविन्द केजरीवाल)

Sudershanalok_2023_Pages_1-33_Layout 1 13-Mar-23 10:28 AM Page 21

मंत्री
श्रम एवं रोज़गार
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन
भारत सरकार

MINISTER
LABOUR & EMPLOYMENT
ENVIRONMENT, FOREST AND CLIMATE CHANGE
GOVERNMENT OF INDIA

भूपेन्द्र यादव
BHUPENDER YADAV

शुभकामना संदेश

जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट को स्मारिका **सुदर्शनालोक- 2023** के प्रकाशन पर शुभकामनाएं। मुझे बताया गया है कि वार्षिकी में संस्था के विभिन्न जन-कल्याणकारी कार्यमों के संकलन के साथ-साथ समाज में सकरात्मक बदलाव लाने के उद्देश्य से धर्म, संस्कृति, अध्यात्म, कला इत्यादि सम्बन्धित लेख भी प्रकाशित किये जाते हैं।

श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी जी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के मार्गदर्शन में आश्रम द्वारा विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों से समाज लाभान्वित हो रहा है। आश्रम की गतिविधियों की विविधता प्रशंसनीय है, विशाल गौशाला के संचालन से लेकर महाविद्यालय में संस्कृत की शिक्षा तक, पर्यावरण-संरक्षण हेतु वृक्षारोपण से स्वास्थ्य सुविधाओं तक, सभी कार्यों के लिए मैं, हृदय से आश्रम का अभिवादन करता हूँ।

मै, संस्था की प्रगति की मंगलकामना के साथ, पुनः वार्षिकी **सुदर्शनालोक-2023** के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं देता हूँ।

सादर।

आपका,

(भूपेन्द्र यादव)

कृष्ण पाल गुर्जर
KRISHAN PAL GURJAR

केंद्रीय राज्य मंत्री,
भारी उद्योग और ऊर्जा मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली
UNION MINISTER OF STATE FOR
HEAVY INDUSTRIES AND POWER
GOVERNMENT OF INDIA, NEW DELHI

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद अपनी वार्षिक पत्रिका के नये अंक 'सुदर्शनालोक-स्मारिका वर्ष 2023' का प्रकाशन कर रहा है।

जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट संचालित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम अपने संस्थापक स्वामी सुदर्शनाचार्य के सिद्धांतों और आदर्शों का समाज में प्रचार-प्रसार कर रहा है। आशा है कि ट्रस्ट अपनी धार्मिक, शैक्षणिक तथा सामाजिक गतिविधियों को भविष्य में भी ऐसे ही जारी रखेगा।

मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिये अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

जय हिंद,

(कृष्णपाल गुर्जर)

36, उद्योग भवन, नई दिल्ली–110011 • फोन : 23062676/78, 23061593, फैक्स : 23060584
36, Udyog Bhawan, New Delhi-110011 • Phone : 23062676/78, 23061593, Fax : 23060584

कैलाश चौधरी
KAILASH CHOUDHARY

कृषि एवं किसान कल्याण
राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR AGRICULTURE
& FARMERS WELFARE
GOVERNMENT OF INDIA

Message

I am happy to know that Janhit Sewa Charitable Trust is bringing out the next annual issue of **SUDARSHANALOK-Smarika Varsh 2023.**

I have been informed that **SUDARSHANALOK**- Smarika is aimed to provide socio-academic religious literature in the large interest of the human mankind and to ensure harmony in the world as this publication will consist of views and articles from renowned academicians, philanthropist, social workers and religious Gurus.

I wish Janhit Sewa Charitable Trust all the best for their future endeavours and hope that they will continue to do their good work in the service of people at large.

(Kailash Choudhary)

Office : 199Q, Krishi Bhawan, New Delhi-110 001. Tel. : +91-11-23782343, 23388165 Fax : 23074190

सतपाल महाराज
मंत्री
SATPAL MAHARAJ
Minister

उत्तराखण्ड सरकार

लोक निर्माण विभाग, पर्यटन, सिंचाई, लघु सिंचाई ग्रामीण निर्माण
पंचायती राज, जलागम प्रबन्धन, संस्कृति, धर्मस्व
भारत-नेपाल उत्तराखण्ड नदी परियोजनाएं
उत्तराखण्ड सरकार
Public Works Department, Tourism, Irrigation, Minor Irrigation,
Rural Works Department, Panchayati Raj, Watershed Management, Culture
Spiritual Department, Indian-Nepal-Uttarakhand River Projects
Government of Uttarakhand

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि **जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट** विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिकी **सुदर्शनालोक-2023** का प्रकाशन करने जा रहा है। स्मारिका का मुख्य उद्देश्य जनमानस के मध्य धर्म, संस्कृति, अध्यात्म, कला साहित्य का प्रचार प्रसार करना है। सुदर्शनालोक स्मारिका में संतों, धर्माचार्यों एवं विद्वानों के संदेश एवं विचारों का संकलन है जिसके पठन-पाठन से आम जन लाभान्वित होगा।

मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं ज्ञापित करते हुए **जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट** के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

भवनिष्ठ

(सतपाल महाराज)

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्।।

कार्यालय - विधान सभा भवन, देहरादून दूरभाष : (0135) 2666377 फैक्स : (0135) 2666380 आवास - 17, सुभाष रोड़, देहरादून, दूरभाष : 9810990009
ई-मेल : writeto@satpalmaharaj.in वेबसाइट : www.satpalmaharaj.in

भूपेन्द्र सिंह हुड्डा,
एम. एल. ए.,
नेता प्रतिपक्ष,
नेता कांग्रेस विधायक दल,
हरियाणा विधान सभा एवं
पूर्व मुख्य मन्त्री, हरियाणा

BHUPINDER SINGH HOODA,
M.L.A.
Leader of Opposition,
Leader of Congress Legislature Party,
Haryana Vidhan Sabha and
Former Chief Minister, Haryana.

D.O. No.
Secy/EX-CMH/2022/462
Kothi No. : 70, Sector-7,
Chandigarh.
Ph. : 0172-2794473

Dated 12-11-2022

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका **सुदर्शनालोक-2023** का प्रकाशन किया जा रहा है।

जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट, फरीदाबाद द्वारा मानव कल्याण हेतु श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम, श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री नारायण गौशाला, संस्कृति महाविद्यालय आदि के माध्यमों से भजन-सत्संग, आध्यात्मिक प्रवचन, हवन-यज्ञ, संस्कृत का प्रचार-प्रसार, स्वास्थ्य सेवाओं, गोपालन, पौधारोपण एवं नित्य निशुल्क भोजन सेवा आदि का संचालन एक सराहनीय कदम है।

इस स्मारिका के माध्यम से जनमानस के लिये धर्म, संस्कृति, अध्यात्म, कला, साहित्य का प्रचार-प्रसार का कार्य किया जाता है जो वर्तमान परिस्थितियों में नितान्त आवश्यक है। इसके अतिरिक्त इस स्मारिका में संतों, धर्माचार्यों व विद्वानों के संदेश प्रसारित किये जाते हैं जो कि जनमानस के लिये बहुत ही उपयोगी होते हैं।

मैं, शुभकामनाएं भेजते हुये स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(भूपेन्द्र सिंह हुड्डा)

Delhi : #15, Talkatora Road, New Delhi - 110001, Ph. : +91-11-23311758, 23312326.
Rohtak : Model Town, Delhi Road, Rohtak (Haryana) - 124001, Ph. : +91-1262-282283.
Chandigarh : Kothi No. 70, Sector-7, Chandigarh - Ph.: 0172-2794473

सत्यमेव जयते

वसुन्धरा राजे

13, सिविल लाइन्स
जयपुर (राज.)

सन्देश

संदेश

हर्ष का विषय है कि जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा इस वर्ष भी ट्रस्ट का वार्षिक संस्करण **'सुदर्शनालोक – स्मारिका वर्ष 2023'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस प्रकार का साहित्य समाज में सेतु का काम करते हैं। जिसका उद्देश्य समाज को सामाजिक, शैक्षणिक तथा धार्मिक साहित्य उपलब्ध कराने के साथ सम्पूर्ण समाज में सद्भावना कायम करना है।

इस स्मारिका में प्रकाशित धर्मगुरुओं, शिक्षाविदों और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के विचार इस स्मारिका को बहुउपयोगी बनाने में सहायक होंगे।

'सुदर्शनालोक-स्मारिका वर्ष 2023' की सफलता के लिए शुभकामनाएं।

वसुन्धरा राजे

(वसुंधरा राजे)

सत्यमेव जयते

Smt. Maneka Sanjay Gandhi
MEMBER OF PARLIAMENT
(Lok Sabha)

शुभकामना संदेश

आदरणीय स्वामी जी,

आपके चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे कार्यों के लिए मैं आपको बधाई देती हूं। श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम भारत के प्रसिद्ध आध्यात्मिक केंद्रों में से एक है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आपका चैरिटेबल ट्रस्ट गोवंश के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

सुदर्शन लोक स्मारिका के संकलन हेतु मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

भवदीया

मेनका संजय गांधी

(श्रीमती मेनका संजय गाँधी)

14, ASHOKA ROAD, NEW DELHI - 110001, PH.: 011 23357088 FAX : 011 2335432

अरुण सिंह
संसद सदस्य
(राज्य सभा)

सत्यमेव जयते

ARUN SINGH
Member of Parliament
(Rajya Sabha)

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम श्री सिद्धदाता आश्रम जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित स्मारिका सुदर्शनालोक-2023 का प्रकाशन किया जा रहा है।

श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा संचालित विभिन्न प्रकार के जन-कल्याणकारी एवं धर्मार्थ कार्य अत्यन्त ही प्रसंशनीय हैं। वास्तव में आदिकाल से भारत की भूमि पर साधु-सन्तों एवं मनीषियों ने सेवा परमो धर्म के मंत्र का अनुशरण करते हुए अनवरत् स्वयं को प्राणी मात्र एवं मानव मात्र के कल्याण के लिए समर्पित किया और इसी सेवा भाव ने हमारी संस्कृति को अन्यों से इतर एवं विशेष बनाया है।

मुझे हर्ष है कि पूज्यपाद जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्री स्वामी सुदर्शनाचार्य जी द्वारा संस्थापित श्री सिद्धदाता आश्रम जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट इसी महान परंपरा को आगे बढ़ाने में अपना अंशदान दे रहा है।

अतः मैं इस संस्था की प्रगति और स्मारिका सुदर्शनालोक-2022 के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

धन्यवाद,

भवदीय,

(अरूण सिंह)

कार्यालयः 6-ए, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 दूरभाषः 011-23500000
Off.: 6-A, Deendayal Upadhyay Marg, New Delhi-110002 Ph : 011-23500000
निवासः 6, गुरुद्वारा रकाबगंज रोड, नई दिल्ली-110001 दूरभाष : 011-23310386
Res.: 6, Gurudwara Rakabganj Road, New Delhi-110001 Ph.: 011-23310386
ईमेलः arunsinghbjp@gmail.com www.facebook.com/arunsinghbjp twitter.com/arunsinghbjp

Deepender Singh Hooda
Member of Parliament (Rajya Sabha)

15, Talkatora Road, New Delhi-110001
Tel : +91 11 23312326, 23311758,
23093805 e-mail office@deepender.in

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि पूर्व के वर्षों की भांति इस वर्ष भी जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट आपनी वार्षिक स्मारिका सुदर्शनालोक-2023 का प्रकाशन कर रहा है। स्मारिका के माध्यम से आमजन में धर्म, संस्कृति, अध्यात्म, विद्वानों एवं जनसेवकों के लोकोपकारी विचारों का संकलन निश्चय ही उपयोगी सिद्ध होगा।

ट्रस्ट द्वारा जनकल्याण के लिये किये जा रहे कार्यों के लिये मैं संस्था के प्रत्येक सदस्य को साधुवाद देता हूँ तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

हार्दिक शुभेच्छाओं के साथ।

(दीपेन्द्र सिंह हुड्डा)

पी. मुरलीधर राव
P. Muralidhar Rao

भारतीय जनता पार्टी
Bharatiya Janata Party

शुभकामना संदेश

जानकर अति प्रसन्नता हुई कि फरीदाबाद में जनहित सेवा चैरिटबल ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिकी **'सुदर्शनालोक-2023'** का प्रकाशन करने जा रहा है। जिसमें संस्था की गतिविधियों सहित समाज उपयोगी लेखों का भी संग्रह होता है। श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के कुशल नेतृत्व में आश्रम द्वारा चलाई जा रही विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों के बारे में जानकर अभिभूत हूं और इनके निरंतर प्रगति की कामना करता हूं ।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आश्रम द्वारा एक विशाल गौशाला का संचालन किया जाता है वहीं संस्कृत और संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए एक महाविद्यालय भी चलाया जा रहा है जिसमें बच्चों को शास्त्री तक निःशुल्क शिक्षा के साथ आवासीय सुविधाएं भी दी जाती हैं। आश्रम द्वारा संचालित पर्यावरण, समाज कल्याण की अन्य गतिविधियों में वृक्षारोपण, वस्त्र वितरण, स्वास्थ्य सुविधाएं आदि भी असमर्थजनों को सहर्ष प्रदान की जाती हैं। संस्था निसंदेह प्रशंसा की पात्र है।

मैं समझता हूं कि धार्मिक संस्थाएं यदि इस प्रकार की गतिविधियों को बढ़ावा दें तो समाज से अनेक बुराइयों को समाप्त किया जा सकता है। हमें संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति और सुंदर एवं जन उपयोगी वार्षिकी सुदर्शनालोक-2023 के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता हूँ।

(मुरलीधर राव)

6-ए, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110 002, दूरभाष : 011-23500000 फैक्स : 011-23500190
6-A, Deendayal Upadhyay Marg, New Delhi-110 002, Phone : 011-23500000 Fax : 011-23500190

महेन्द्र पाण्डेय
राष्ट्रीय कार्यालय सचिव

भारतीय जनता पार्टी
Bharatiya Janata Party

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि पूर्व के वर्षों के भांति इस वर्ष भी **'जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट'** अपनी वार्षिक **सुदर्शनालोक** का इस वर्ष (2023) प्रकाशन कर रहा है। यह स्मारिका संतों, धर्माचार्यों, विद्वानों एवं जनसेवकों के संदेश एवं विचारों का संकलन है। इस स्मारिका के माध्यम से जनमानस के मध्य संस्कृति, धर्म, आध्यात्म, साहित्य एवं कला का प्रचार-प्रसार किया जाता रहा है।

'जनहित सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट' द्वारा लोक कल्याण हेतु श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम, श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री नारायण गौशाला, स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद वेदांग संस्कृत महाविद्यालय आदि के माध्यम से भजन-सत्संग, आध्यात्मिक प्रवचन, हवन-यज्ञ, संस्कृत का प्रचार-प्रसार, गौसेवा, पौधारोपण, स्वास्थ्य सेवाएं, स्वच्छता, सेवा प्रकल्प, पर्यावरण आंदि नित्य एवं निशुल्क भोजन सेवा आदि का भी संचालन किया जा रहा है।

मैं पूजनीय श्रीमद जगद्गुरू रामानुजानार्य स्वामी श्री पुरूषोत्माचार्य जी महाराज, अधिपति- श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) को इस 'स्मारिका' के सफल प्रकाशन हेतु हृदय से शुभकामनाएं देता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह समाज और मानवता के उत्थान के लिए इसी प्रकार अपना योगदान देते रहें।

आपका,

(महेन्द्र पाण्डेय)

6-ए दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110 002 दूरभाष : 011-23500000 फैक्स : 011-23500190
6-A, Deendayal Upadhyay Marg, New Delhi-110 002, Phone : 011-23500000 Fax : 011-23500190
Email: pandey.bjp@gmail.com

गो–विज्ञान अनुसंधान केंद्र, देवलापार, नागपुर.

''कामधेनू कृषि तंत्र'' आंचलिक प्रशिक्षण केंद्र एवम् प्रयोगशाला
खादी व ग्रामोद्योग आयोग एवम् जीवजंतु कल्याण बोर्ड भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
रजि. नं. एफ– 22569 (नागपुर) महा. FD Lic. No.ND/Ayu/48
प्रधान कार्यालय :–'कामधेनु' घटटे वाडा, पं. बंच्छराजजी व्यास चौक, चितार ओली, महल नागपुर –32
फोन –0712–2772273/2734182, Fax : 2721589 C/o
कार्यशाला : E-mail :gauvigyan@gmail.com, gauseva@yahoo.co.in Web Site : www.govigyan.com
एवम् प्रयोगशाला : 'सेवाधाम' देवलापार, ता. रामटेक, जिल्हा नागपुर – 441408

संदेश

प.पू. महाराजजी को

सादर साष्टांग प्रणाम!

आपने संदेश के लिए आदेश दिया उसका पालन करने का प्रयास करता हूँ। अपनों से बात करना जरूरी है, संदेश की पात्रता नहीं है।

प्रभु कृपा से हम सभी भारतीय गोवंश की रक्षा में लगे जो इस युग में ईश्वर का वरदान जैसा है क्योंकि मनीषीजन कहते हैं, गाय ही हमें तारेगी जैविक कृषि, पंचगव्य आयुर्वेद, देशी नस्ल संरक्षण, ग्रामीण स्वावलंबन रोजगार निर्मिती, पारंपरिक पशु चिकित्सा, अक्षय ऊर्जा स्त्रोत (गोबर व बैल)... आदि अनेक विषय गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, देवलापार, नागपुर के हैं जो सृष्टि संतुलन का विज्ञान है।

आप सब इस पवित्र कार्य में अपना -अपना सर्वस्व अर्पण करें क्योंकि भारत ही गोवंश का महत्व सारी दुनिया को समग्र रूप से बता सकता है।

आपका अपना

सुनील मानसिंहका

राष्ट्रपति-सम्मानित
देवर्षि कलानाथ शास्त्री
(भूतपूर्व अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी
एवं निदेशक, संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार)
अध्यक्ष, आधुनिक संस्कृत पीठ, ज.रा. राजस्थान, संस्कृत विश्वविद्यालय
प्रधान सम्पादक "भारती" संस्कृत मासिक
सदस्य, संस्कृत आयोग, भारत सरकार

मो: +91-8764044066
फोन: (0141)2376008
अध्यक्ष, मंजुनाथ स्मृति संस्थान
सी-8, पृथ्वीराज रोड
जयपुर-302001

शुभाशंसन

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि देश का सुप्रतिष्ठित धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्थान श्री सिद्धदाता आश्रम अपनी सुदीर्घ पावन परम्परा के अनुरूप **सुदर्शनालोक-2023** का प्रकाशन कर रहा है। आश्रम वैष्णव सेवा का दिव्यधाम तो है ही, यहां समाज हित के, देशहित के, शिक्षा के, गौसेवा के तथा जनहित के अनेक कार्य भी हो रहे हैं। सुदर्शनालोक से सांस्कृतिक प्रकाश भी फैलता है तथा आश्रम द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी भी व्यापक रूप से प्रसारित होती है। अनेक वर्षों से सुदर्शनालोक के दिव्य आलोक से हमारा समाज आलोकित हो रहा है। यह परम संतोष एवं गौरव का विषय है। **सुदर्शनालोक -2023** के प्रकाशन के शुभ अवसर पर मेरी हार्दिक शुभाशंसा सहर्ष प्रेषित है।

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

(देवर्षि कलानाथ शास्त्री)

शरणागति और साक्षात्कार

वैकुंठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज
संस्थापक- श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम), फरीदाबाद, हरियाणा

संसार में मानव जन्म प्रभु कृपा के अधीन है। नाना योनियों में कष्ट प्राप्त करके हम कर्म विपाक भोगते रहते हैं। जब ईश्वर की कृपा होती है, तब मानव जन्म मिलता है । मानव और पशु में क्या अन्तर है ? मानव का सच्चा लक्ष्य परमात्मा की प्राप्ति है क्योंकि आहार, निद्रा, भय, मैथुन, भोजन आदि जितने भी कार्य हैं, ये गन्दी नाली के कीड़े से लेकर राजा, महाराजा, हाथी तक में मौजूद हैं। बाबा नानक देव जी फरमान करते हैं - एक भक्ति भगवान्, जिहि प्राणी के नाहिं मन, जैसे सूकर स्वान। नानक मानहुं ताही तन। उसका शरीर तो सूअर, कुत्ते से भी खराब है, जो मानव शरीर को धारण करने के बाद परमात्मा की प्राप्ति की ओर गमन नहीं करता, लक्ष्य नहीं बनाता । मानव का परम लक्ष्य सच्चा ध्येय उस प्रभु की ही प्राप्ति है। ये भोग तो हर योनि में मिल जायेंगे । जिस योनि में हम जायेंगे, उस योनि में भोग विलास सब मौजूद हैं, यह नहीं कि यह मानव योनि में ही हैं। मानव योनि में तो कमाने का फिक्स, इनकम टैक्स का फिक्स, चोरी का फिक्स, डाके का फिक्स रहता है, परन्तु बहुत सी योनियाँ ऐसी हैं जिनमें कोई फिक्स है ही नहीं और हजार-हजार मानवों से इतने बलवान, जो अकेले ही युद्ध कर लेते हैं। मानव के लक्ष्य की ओर हम गमन करें। सर्वप्रथम तो सर्वोपरि वह एक ही है अर्थात् ब्रह्म जो कालातीत है, उस परमात्मा का स्मरण करें।

नारायण सार तत्व है । परतत्व अन्तिम बिन्दु और रहस्य है, उसके आगे और उससे महान् कुछ भी नहीं है । विष्णु पुराण में कहा गया है-

यस्मिन्ब्रह्मणि सर्वशक्तिः निलये,
मानन्ति नो मानिनास्।
निष्ठायै प्रभवन्ति हन्ति कलुषं,
श्रोत स यातो हरिः ।। (विष्णु पुराण)

नारायण की महिमा अपार है। भगवान् श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं-

व्यथा नदीनां बहवाम्बुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति।

जैसे सभी नदियां समुद्र की ओर चली जाती हैं, इन सबका मुख समुद्र की तरफ ही होता है। चाहे देश प्रदेश कोई भी है, वह सब समुद्र की ही ओर गमन करती हैं । इसी तरह से, हे अर्जुन! मैं परम आश्रय हूँ। जितने भी देव हैं, वे सब मेरी ही ओर गमन करते हैं। अर्थात् मुझमें ही विलीन हो जाते हैं । ये सब मेरी ही विभूति हैं- राम, कृष्ण, गोपाल, गोविन्द क्योंकि मैं धर्म की रक्षा करने के लिए अनेकानेक रूप धारण करके आता हूँ। इसलिए ये मेरे ही रूप हैं। सभी संतों ने, सद्ग्रन्थों ने परब्रह्म नारायण को ही स्वीकार किया अर्थात् नारायण ही मोक्ष का दाता या भवबन्धन से पार करने वाला माना। सन्त शिरोमणि तुलसीदास जी जिनके लिये हम मानते हैं कि उनके उपास्य देव, आराध्य देव श्रीराम जी हैं, पर ऐसा नहीं है क्योंकि वे मंगलाचरण में लिखते हैं-

नील सरोरुह स्याम, तरुन अरुन बारिज नयन।
करहु सो मन उर धाम सदा क्षीर सागर सयन।। (मानस)

भगवान श्री कृष्ण हमेशा क्षीरसागर में शयन करने वाले भगवान् नारायण रूप हैं। आप मेरे हृदय में सदा विराजमान हो जाइये, क्योंकि आपका जो रूप राम है, उसका गुणगान मैं लिखना चाहता हूँ। भगवान् विष्णु को वंशीधर के रूप में स्वीकार न कर धनुर्धारी के रूप में स्वीकार किया। मीरा ने जो कृष्ण का स्वरूप देखा, कस्तूरी तिलक वाले वैजयंती माला धारण किए हुए है। ऐसे नारायण मेरे हृदय में विराजमान रहो। मीरा जीवन भर कृष्ण की उपासना करती रही। किन्तु अन्तिम काल में कहने लगी - मैं तो मेरे नारायण की आप ही हो गई दासी रे। पग घुंघरु बाँध मीरा नाची रे।

कबीरदास जी ने भी अनेक ग्रन्थों की रचना की। लोग कहते हैं कि कबीरदास जी निर्गुण उपासक थे । परन्तु उन्होंने सगुण उपासना की।

निर्गुण नहीं क्योंकि निर्गुण के लिए उन्होंने कहा है, हे संतों आप निर्गुण का अर्थ हो नहीं समझते। भगवान तमोगुण, रजोगुण, सतोगुण तीनों गुणों से ब्रह्मा, विष्णु, महेश को उत्पन्न कर देते हैं और स्वयं गुणातीत हो जाते हैं। अतः उनको निर्गुण कहते हैं। नारायण के लिए उन्होंने बड़ा स्पष्ट लिखा है-

कहत कबीर सुनो भाई सन्तो, भज मन सारंगपाणी।

सारंग नाम के धनुष को हाथ में ग्रहण करने वाले श्रीमन्

नारायण ही हैं। तो कबीरदास जी, मीरा, सहजो, सूरदास या कागभुण्सुण्डिजी महाराज, जिन्होंने कहा, इष्ट देव मम बालक रामा, जवान राम नहीं लिखा। कौन से बालक रामा? 'निजि आयुध भुजचारी, भूषण वनमाला, नयन विशाला शोभा सिन्धु खरारी। वो बालक राम जिसने चतुर्भुजी रूप धारण करके कौशल्या को दर्शन दिये । वो श्री भगवान् नारायण, मेरे इष्ट हैं, गरुड़ जी। बाबा नानक देव जी फरमान करते हैं, भ्रमत-भ्रमत मैं हारियो / मैं भ्रमते- भ्रमते हार गया, थक गया। भ्रमते-भ्रमते का मतलब है - लख चौरासी योनियों में मेरा जन्म-मरण होता ही रहा । मैं योग, ध्यान, धारणा करते-करते थक गया लेकिन मेरे मन को शान्ति प्राप्त नहीं हुई ।

एक सन्त आकर कहने लगे कि हे नानक -
सन्त दयाल कृपाल भये मो पर तब यह बात बताई ।
सर्वधर्म तब पूरण होई हैं नानक गहो प्रभु के शरनाई ।।
(नानक देव)

बाबा फरमान कर रहे हैं कि मैं निरंकारी नानक था । बचपन में मेरे गुरु पं. हरदयाल शास्त्री ने मेरा नाम निरंकारी नानक रखा और निराकार की उपासना करते-करते मैं थक गया। सन्त ने कहा कि हे नानक! वो निरंकारी नानक मर चुका है, अब ये नानक दास हो गया है। नानक दासन कर दासा-दासानुदास हो गया है, तू भगवान् श्री नारायण का स्मरण कर उससे तेरे दुःख दूर होंगे। श्रीहरि का स्मरण कर। वह तेरे दुःखों को दूर करेगा।

हम अपने सांसारिक जीवन में एक दिन भी भोजन न मिलने को दुःख मान लेते हैं। यदि छोटी सी विपदा भी आ जाये तो उसे बहुत बड़ा दुःख मान लेते हैं । किसी ने आक्रोश के साथ तेज बोल दिया, उसे भी दुःख मान लेते हैं। यदि मान-अपमान में फर्क पड़ गया तो उसको भी हम सहन नहीं कर पाते हैं । उसे दुःख की संज्ञा में मान लेते हैं। सांसारिक जीवन में व्यवहार होता है । व्यवहार में संघर्ष रहता है और संघर्ष में छोटी-छोटी बातों पर ध्यान नहीं दिया जाता है। वहाँ मान-अपमान का प्रश्न नहीं रहता है। किन्तु हमारा चिन्तन इतना संकीर्ण हो जाता है कि हम क्षणिक से दुःख को महान दुःख मान लेते हैं। व्यावहारिक जीवन में दुःख तो यह है कि हम जन्म लेते हैं और मरते हैं । जन्म और मृत्यु ही गहन दुःख है । प्राणी जब जन्म लेता है, नौ माह तक माता के गर्भ के अन्दर रहता है । इसे हम महाघोर नरक कह सकते हैं । घोर नरक क्या है? माँ का पेट, जहाँ मल और मूत्र साथ में लगे हुए हैं। माँ गर्म खाती है, तेज खाती है, चटनी खाती है और वह उस गर्भ के ऊपर अर्थात् उस जीव के ऊपर लगता रहता है । उसको सहन करता रहता है । थोड़ी देर हवा नहीं चलती तो हमारा जी घुटने लगता है, पर वहाँ कोई हवा नहीं है, न वहाँ कोई एअर कन्डीशनर है, न पंखे हैं, न कूलर हैं । वह एक प्लास्टिक की थैली के अन्दर बन्द है। देखिये कि वहाँ कितना भारी कष्ट है। वहाँ चारों तरफ मल-मूत्र हैं और जब यह जीव निकलता है तो अपने किए हुए कर्मों के द्वारा पापों का फल भोगता रहता है। पचता रहता है, मरता रहता है । मरने का जीवन से ज्यादा दुःख होता है क्योंकि समाज और संसार में हम अनेकानेक प्रकार के रिश्ते बाँध लेते हैं।

अनेकानेक प्रकार के प्रेम बन्धन बना लेते हैं। न मिलने पर तड़पने लगते हैं परन्तु जब आँखें बन्द होंगी, उस वक्त विचार कीजिए, सबको त्यागना पड़ेगा । ये बाबाजी रुचि-रुचि करके यह आश्रम बना रहा है, आप लोग बना रहे हैं, पर इस बाबाजी को त्यागना पड़ेगा, यह निश्चित है। तो त्यागते समय कितना भारी कष्ट होगा, यह विचार कीजिए । तो जन्म और हे मरण का कष्ट सबसे महान कष्ट है। बाबा नानक देव जी के गुरु बाबा से फरमान कर रहे हैं - जन्म-मरण के संकट को परमात्मा श्री हरि ही मिटा सकता है और किसी के बस बात है नहीं क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु, महेश तो स्वयं बन्धन में बँधे हुए हैं। ये मोक्ष नहीं दे सकते । ये तुम्हें भोग दे सकते हैं, मोक्ष नहीं, क्योंकि मोक्ष की इच्छा तो ये स्वयं ही रखते हैं। इसी सन्दर्भ को लेकर बाबा नानक देव फरमान कर रहे हैं: -

दुःख भंजन तेरा नाम जी ।

सत्संगति :

मनुष्य अपने सांसारिक जीवन में बहुत ही व्यस्त रहता है । उसके पास पारिवारिक दायित्व का इतना बोझ होता है कि वह शुभ काम के लिए समय नहीं निकाल पाता है । मनुष्य के जीवन में शुभ समय, मनुष्य के जीवन का वास्तविक समय या मनुष्य जीवन का सच्चा लक्ष्य या जिन दिनों की गणना होती है, वो यही दिन हैं।

ऐसे तो आपके पास वर्ष में 365 दिन होते हैं। किन्तु ये सभी दिन सांसारिक जीवन में व्यतीत हो जाते हैं, कुछ दिन ही ऐसे होते हैं जिनमें हम मानव जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। यह शुभ समय ईश्वर की कृपा से और सौभाग्य से ही प्राप्त होता है । इस दिन के लिए आपको आमन्त्रण या निमन्त्रण नहीं दिया जाता है, अपितु आपकी मानसी इच्छा

आपको शुभ कर्म के लिए प्रेरित करती है। जब यह जीव भगवत प्राप्ति के लिए, भगवत् इच्छा के लिए अर्थात् उसके नामोच्चारण, स्मरण और कीर्तन के लिए अपने घर के अनेकानेक कामों को छोड़कर सत्संग के लिए आता है, वही हमारे जीवन के लिए मंगलमय समय है, अन्यथा हम अपने सांसारिक कार्यों में बहुत व्यस्त रहते हैं। नौकरी करते हैं या व्यापार करते हैं, धन कमाते हैं, विद्या का अर्जन करते हैं, सामाजिक समारोहों में सम्मिलित होते हैं, सांस्कृतिक उत्सवों में उमंग के साथ सम्मिलित होते हैं, पर इन सबकी पृष्ठभूमि में हमारे जीवन का लक्ष्य नहीं है । आपने जिस उद्देश्य के लिए जन्म लिया है, उससे किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है।

भौतिकवाद के कर्मों में शुभ हो सकता है किन्तु महाशुभ नहीं हो सकता है। हनुमानजी से रामजी पूछते हैं कि हे हनुमान जी! हम राज्याभिषेक हो जाने के बाद आपसे मंगलमय समाचार नहीं पूछ पाये, कुशलक्षेम भी नहीं पूछ पाये। आप भूखे रहे, प्यासे रहे, कितने कष्ट आपने सहन किये हैं? हम तो इतने व्यस्त हो गये कि आपके समाचार भी नहीं ले सके। हनुमान जी महाराज हँसकर, नमस्कार करते हुए कहते हैं कि हे प्रभो! मैं आपके सान्निध्य में हूँ। विपत्ति नाम को जानता ही नहीं हूँ, कष्ट क्या होता है, इससे मेरा परिचय नहीं है । मैं विपत्ति जानता ही नहीं हूँ । मैंने तो एक ही कष्ट माना है जब मैं आपका नाम नहीं ले सकूं, आपकी जय नहीं बोल सकूं, आपका स्मरण नहीं कर सकूं, आपका भजन नहीं कर सकूं, आपका सत्संग नहीं सुना पाऊँ। इनमें से एक भी मानव को नहीं मिलता है तो सबसे बड़ी विपत्ति की चीज है । हे प्रभो! सांसारिक विपदाओं की चिन्ता नहीं है, मुझे कष्ट की चिन्ता नहीं है, सुख-दुःख का अहसास नहीं है। मैं तो आपका सेवक हूँ, आपका भक्त हूँ, दिन-रात आपकी भक्ति में तल्लीन रहता हूँ। जो भक्त भगवान् का शरणागत हो गया, उसे विपत्ति छू भी नहीं सकती है। जिसदिन आपका स्मरण नहीं करूँ वही दिन कष्ट का दिन है। हे प्रभो! आज तक ऐसा दिन नहीं आया। मैं आपके नित्य दर्शन कर लेता हूँ और यदि आप नहीं होते हैं तो दर्शन की इच्छा भी नहीं रखता हूँ । उस समय आपके नाम में ही मनन हो जाता हूँ और यही कहता हूँ 'हे राम, हरे राम राम-राम हरे-हरे। मैं तो करताल लेकर आपकी भक्ति में नृत्य करता रहता हूँ। आपकी जयगान करता रहता हूँ, मुझे कष्ट किस बात का है? महाकष्ट तो वह कहलाता है, जब यह जीव प्रभु की ओर गमन नहीं करता है, अर्थात भगवान् का स्मरण नहीं करता, तब तो महाकष्ट है, चाहे वह करोड़पति हो, अरबपति हो, खरबपति हो । यह पति शब्द तो व्यर्थ है, क्योंकि मरघट तक ही पति होते हैं। सांसारिक जीवन में वे पति कहलाते हैं, उनकी प्रतिष्ठा होती है किन्तु मृत्यु होने पर उनका पति शब्द व्यर्थ हो जाता है। वे भक्ति नहीं करने के कारण नाना प्रकार की योनियों में भटकते रहते हैं । ऐसा पति बनने से क्या लाभ होगा ?

भगवान् पति तो आप हैं। आप ही का नाम जगत्पति, जीवनपति, आत्मापति, भक्ति पति, लक्ष्मीपति है। एक ही नारायण है । दूसरा कोई नारायण हो ही नहीं सकता है। बैठे हुए हैं, जिस प्रेरणा के लिए बैठे हुए हैं, चाहे भाव से आये हैं, चाहे कुभाव से आये हैं, चाहे अन्य कारण से आये हैं, चाहे आलस्य से आये हैं। किसी भी प्रकार से आप इस सत्संग में आये हैं, आपका आना ही मंगलमय है। दसों दिशाओं में कल्याण ही कल्याण होगा । आप किस भाव से आये हैं, किस विचार से आये हैं, किसकी प्रेरणा से आये हैं, पर आप यहाँ आये हैं, यह आपके जीवन के लिए मंगलमय है। प्रभु का नाम स्मरण करने से मानव का कल्याण होता है, उसकी विपदा और कष्ट भगवान स्वतः ही दूर कर देते हैं । रामचरितमानस में आया है-

भाव कुभाव अनख आलसहूँ,
नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।

मेरे प्रेमियो, मेरा तो यह मानना है कि आप यहाँ आये हैं । प्रश्न यह उठता है कि आप यहां तक क्यों आये हैं? तो मेरा उत्तर यही होगा, -हे प्रभो! ये तेरे लिये आये हैं, तेरी भक्ति के लिए आये हैं, तेरे स्मरण के लिए आये हैं, तेरे भजन के लिए आये हैं, तेरे सत्संग के लिए आये हैं, तेरे नाम के लिए आये हैं। जब कोई भक्त तेरा कीर्तन, भजन और नाम उच्चारण करता है तो उसके जीवन में कल्याण ही कल्याण है। ऐसे शुभ अवसर इस जीवन में कभी- कभी ही प्राप्त होते हैं । हमेशा नहीं मिलते हैं और जिन लोगों के लिए हमेशा ऐसा अवसर उपलब्ध होता है, वह महा भाग्यशाली कहलाता है । जिसने गृहस्थ का भार त्याग कर प्रभु की शरणागति प्राप्त कर ली है और प्रभु के प्रति रुचि बना ली है, वे इस संसार में महाभाग्यशाली हैं। इसलिए सत्संग में आने वालों का शुभ अभिवादन किया जाना चाहिए।

संसार के इस जीवन की गति अत्यन्त विचित्र है। जैसा कि हम कहा करते हैं, कमल के फूल के अन्दर भौंरा शीतल, मंद, सुगन्ध को लेता हुआ इतना मस्त हो गया कि उसे इतना भी ध्यान नहीं रहा कि मेरा जीवन किस स्थिति में फँसा हुआ है? यह भी जानकारी नहीं रही कि सूर्य अस्त होने वाला है और

सूर्य अस्त होने पर कमल की पंखुड़ियाँ स्वतः ही बन्द हो जाती हैं। वह भौंरा सबको भूल जाता है और उस कमल की पंखुडियाँ सायंकाल बन्द हो जाती हैं और बन्द हो जाने पर वह भौंरा धीरे-धीरे मुरझाने लगा अर्थात् उसकी प्राण वायु रुकने लगी, परन्तु फिर भी वह गन्ध में इतना मस्त है कि रात हो जाने पर भी यही कल्पना करता है कि फिर उस शीतल, मन्द, सुगन्ध का स्वाद लूँगा, फूलों का रस पीऊँगा ।

इसी भ्रान्ति में अन्धकार भरी एक लम्बी रात बिता देता है । ऐसे ही मानव इस संसार में आता है और भौतिक साधनों में तल्लीन हो जाता है, वासनाओं में इस तरह खो जाता है कि जीवन का उद्देश्य भूल जाता है, वह भूल जाता है कि मेरा इस पृथ्वी पर आने का लक्ष्य क्या था? मुझे ईश्वर ने कृपा करके मानव योनि दी थी, मुझे सद्कर्म करना था, मुझे भगवत् स्मरण करना था किन्तु वह तो सांसारिक जीवन के आनन्द में इस तरह मस्त हो जाता है कि उसे अपने लक्ष्य का ध्यान ही नहीं रहता है। शनैः शमैः यौवन बीत जाता है, जीवन की शक्ति घटने लगती है, फिर भी मानव की तृष्णा समाप्त नहीं होती है और मानव काल के कराल गाल में प्रवेश कर जाता है । जब मृत्यु निकट आने लगती है तो घुटन सी महसूस होती है किन्तु फिर भी उसकी भँवरे की तरह कल्पना रहती है कि पुनः मानव योनि में जन्म लूँगा।

इस जन्म में कुछ नहीं कर पाया किन्तु अंगले जन्म में भगवत् भक्ति के सिवा कुछ नहीं करूँगा। अपने स्वार्थ का त्याग कर परमार्थ में लगा रहूँगा। एक लम्बी रात के अंधेरे में खो जाता है, उस रात का सवेरा बहुत मुश्किल से होता है। उसके सपने अधूरे रह जाते हैं, कल्पनाएँ पंखहीन हो जाती हैं। शनैःशनैः प्राण वायु कमजोर पड़ती है और मरघट का अतिथि बन जाता है। सत्य तो यही है कि मानव अपने संकल्प और लक्ष्य से विचलित होकर इस संसार में भटकता रहता है । उसकी तृष्णा कभी नहीं छूटती है । भर्तृहरि ने सही ही कहा है कि-

कालो न यातों वयमेव याताः।।
तृष्णा न जीर्णा बयमेव जीर्णाः।। (नीति शतकम्)

हम एक स्वर्णिम अवसर छोड़ देते हैं। जीवन के आनन्द को खो देते हैं और तृष्णा में भटकते रहते हैं। यह जीवन भँवरे की तरह है। प्रातः काल होने को आ गया है। उसी समय एक मदोन्मत्त हाथी जल क्रीड़ा करता हुआ आया। उसने कमल को मूल के सहित अर्थात् उस कमल के साथ मुँह में दबा लिया । उसके साथ-साथ भौंरा भी चकनाचूर हो गया। ठीक उसी प्रकार उस भौंरे की तरह हमारे जीवन की गति है। हमारा ध्यान विलासिता, वैभवता, ऐशो-आराम आदि सुखों के पीछे लगा है । हमें यह भी जानकारी नहीं हो पाती है कि हमारा समय बिल्कुल नजदीक आता चला जा रहा है, काल हमें अपनी ओर आकर्षित करता चला जा रहा है । हम उसकी ओर जा रहे हैं । काल हमारी तरफ बढ़ता चला जा रहा है। और एक दिन वही गति हमारी होती है, जो भौंरे की हुई। वह मदोन्मत्त काल, वह मदोन्मत्त यमराज जितना एक पल का हजारवां भाग है, उतनी देर के बराबर कर देगा और उस वक्त हमारे जितने भी ऐशो-आराम, वैभव व अपूर्ण काम हैं, वे रह जायेंगे अर्थात् हम उनको नहीं कर पायेंगे और आँखों में अश्रु लेकर के हमारा देहान्त हो जायेगा।

हम नष्ट हो जायेंगे इसीलिए उससे पहले ही हम अपना इन्तजाम कर लें, ताकि हमें यमलोक जाना ही नहीं पड़े, यमराज हमारे पास आये ही नहीं। मृत्यु तो आयेगी क्योंकि जो जन्मा है, उसका मरना सुनिश्चित है। जन्म लेना सुनिश्चित है तो मृत्यु भी सुनिश्चित है। परन्तु वह मृत्यु नहीं, जो सद्गति है। अरे! मरती तो दुनिया है, पर मरना कोई-कोई ही जान पाया है । मृत्यु उसका नाम है, एक बार मरने के बाद दुबारा उसको मरना नहीं पड़े । संसार में जीव जन्म लेता है और मरता है, एक बार नहीं, अनेक बार ऐसा क्रम चलता है किन्तु यह मरना मृत्यु नहीं है।

यह तो एक तरह का वस्त्र बदलना है। जैसे मनुष्य एक वस्त्र छोड़कर दूसरा वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार जीवन भी एक योनि छोड़कर दूसरी योनि में जन्म लेता है। यह मानव जीवन इतना सहज नहीं है, जो बार-बार मिल सके। अनेक योनियों में भटकने के बाद जब ईश्वर का अनुग्रह होता है, तभी मानव जीवन मिलता है और मानव जीवन मिलता भी इसलिए है कि वह इस संसार में जन्म लेकर परहित का कार्य करे, दूसरों की भलाई में तत्पर रहे, दूसरों को कष्ट नहीं दे, दूसरों को विपदाओं में नहीं फंसा दे, दूसरों को दुःख नहीं दे। तभी वह मानव कहला सकता है ।

यदि उसने मानवता का परित्याग कर दिया है तो उसका मानव जन्म लेना निरर्थक है और यह सच भी है कि आप जिस उद्देश्य के लिए आए हैं, आपने उस उद्देश्य की ओर ध्यान नहीं दिया तो आपका आगमन निरर्थक है और कभी भी आपको आवागमन से मुक्ति नहीं मिल सकती।

Sudershanalok_2023_Pages_34-47_Layout 1 13-Mar-23 10:43 AM Page 38

मनुष्य के लिए नाम जप महा-औषधि है

अनन्तश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर
श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज
पीठाधीश्वर- श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम), फरीदाबाद, हरियाणा

"सन्तों को नमन करना कभी मिथ्या नहीं होता है। प्रभु का स्मरण करते हैं, भक्तिभाव से भजन करते हैं, गुरु वन्दना करते हैं, तपस्या करते हैं, सत्संगति में रहते हैं, उसका फल नहीं मिले, यह कदापि सम्भव नहीं, ऐसा कभी हो ही नहीं सकता।"

विद्या शस्त्रं च शास्त्रं च द्वे विद्ये प्रतिपत्तये॥
आद्या हास्याय वृद्धत्वे द्वितीयाद्रियते सदा॥
(हितोपदेश 1.7)

शस्त्र और शास्त्र ये दो विद्याएं हैं। शस्त्र विद्या है और शास्त्र ज्ञान की उपलब्धियों को अर्जित करना है। दोनों विद्याओं के वेत्ता पूज्य और महनीय होते हैं। शस्त्र विद्या के महारथी शक्तिमान् होने तक ही समर्थ कहलाते हैं किन्तु शास्त्रवेत्ता सदैव पूज्य कहलाते हैं।

महामुनि कण्व ऋषि दोनों विद्याओं अर्थात् शस्त्र और शास्त्र में पारंगत थे। उनके पुत्र हुए धौम्य। अपनी शैशवावस्था में उन्होंने दूध मांगा। दूध पीने के लिए वह ऋषि पुत्र हठ करने लगा। यहां तक कि हठवादिता के कारण रोना भी आरम्भ कर दिया। मां ने चावलों को पीसकर खड़िया मिलाकर ऋषि पुत्र को दे दिया। उनके यहां दूध की कमी थी। ऋषि परमात्मा के परम भक्त थे तथा समस्त शास्त्रों में पारंगत थे। ऋषि पुत्र ने गिलास को मुंह से लगाकर कहा- ''हे माते! यह दूध नहीं है, मैंने आपसे दूध मांगा था, आपने यह क्या दे दिया? यह कहते हुए ऋषि पुत्र रोने लगा।

मां ने आश्चर्य के साथ प्रश्न किया, ''हे पुत्र! तुझे यह कैसे विदित हुआ कि दूध नहीं है? वह कहने लगा, ''मैं मामाजी के

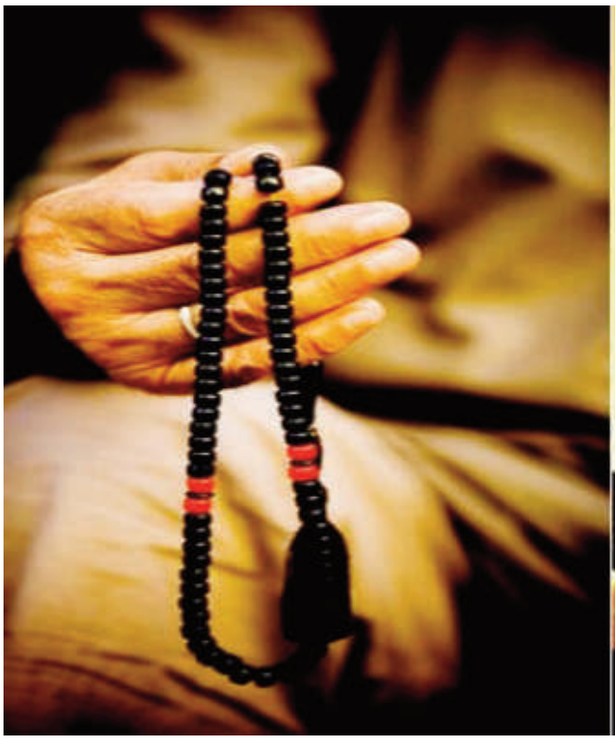

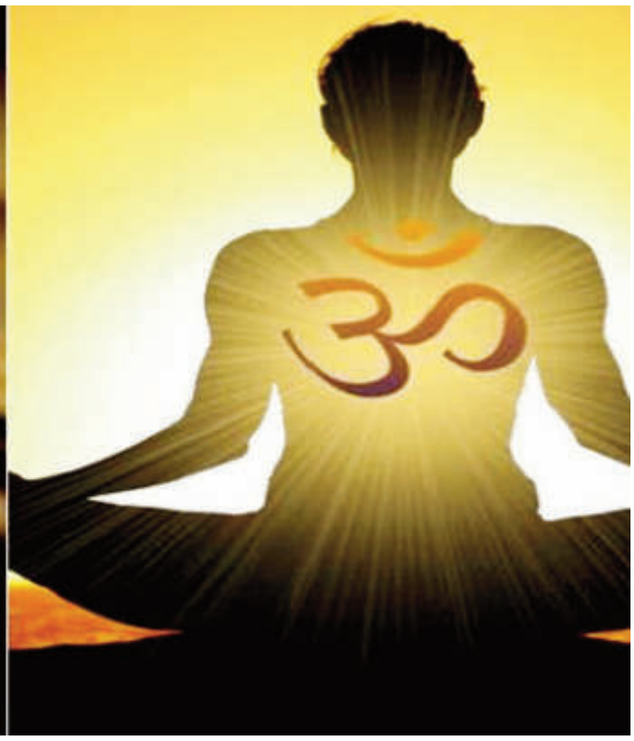

घर गया था तो उन्होंने अपनी गाय का दूध मुझे पिलाया था। वह दूध तो मधुर और स्वादिष्ट था किन्तु यह तो वैसा नहीं है। मां! यह दूध नहीं है।

मां ने स्पष्ट शब्दों में कहा ''पुत्र! अपने घर में गाय नहीं है। मैं दूध कहां से लाती? मैंने चावल पीसकर खड़िया में मिलाकर तुझे दे दिया।''

बालक ने कहा - मां! आपने ऐसा क्यों किया?

मां ने कहा ''पुत्र! तुम्हारे पिता महान् तपस्वी हैं, सन्त हैं, परम विद्वान् हैं।''

पुत्र ने कहा ''मां! तपस्वी हैं? तपस्या के बल से सब कुछ मिल सकता है। भक्ति से क्या प्राप्त नहीं हो सकता? क्या वे तपस्या के बल से मेरे लिए दूध की व्यवस्था नहीं कर सकते?

मां ने अपने पुत्र को समझाते हुए कहा ''पुत्र! तुम्हारे पिता यह कहते हैं कि उन्होंने परमात्मा के यहां जमा कर रखा है, वे लेते नहीं हैं। वे कहते हैं कि लेने के बाद उनकी लेने ही लेने की आदत हो जाएगी और जब मैं इस तरह लेता रहा तो परमात्मा के पास जो संचित धन है, उसमें मेरा कोई हिस्सा नहीं रहेगा। मां ने अपने पुत्र को बड़े प्यार से कहा, पुत्र तुम भी तपस्या करो। मां के कहने के अनुसार धैम्य ऋषि बड़े प्रसिद्ध हुए। उन्होंने परमात्मा से जो कुछ भी मांगा, वह उन्हें प्राप्त हुआ।

मेरे कहने का यह मतलब है कि हम देते बहुत कम हैं और मांगते ज्यादा हैं। जैसे वैष्णव देवी की मन्नत मांग लेते हैं। हे माई! मेरी फैक्ट्री लग जाय, मेरे बच्चा पैदा हो जाय, मेरे बच्चे की बीमारी हट जाये या मेरी नौकरी लग जाये या और काम हो जाये, मैं तेरे यहां आउंगी। पहले ही उधार ले लेते हैं। उधार लेने के बाद, हम कितने भले आदमी हैं कि उस उधार को चुकाने में आना-कानी करते हैं। कहते हैं कि माई ने नहीं बुलाया। क्या माई तुझे लाने के लिए वायुयान भेजेगी? अरे! अपने घर बुलाने के लिए हवाई जहाज भेजेगी क्या? या मर्सीडीस कार भेजेगी, तब तुम जाओगे। ऐसा करने से हमारे जीवन का सार खत्म हो जाता है। हम उस परमात्मा के उन शक्तियों के कर्जदार होते चले जाते हैं। जब हम अधिक कर्जदार हो जाते हैं, फिर हमें कर्जा चुकाने के लिए आना ही पड़ता है।

संसार में अनेक प्रकार के मानव हैं। कुछ लोग इस प्रकार कहते हैं कि हम बाल्यकाल से ही ईश्वर का स्मरण करते रहे हैं। भक्तिभाव से भजन करते चले आ रहे हैं। गुरुकुल में रहे हैं। गुरु जी की शरण में रहे हैं, गुरु वन्दना करते रहे हैं। फिर भी हमें उसका कुछ भी फल प्राप्त नहीं हुआ।

> **"शरण होने का मतलब अपना तन, मन, प्राण, देह, इन्द्रिया, लोक-परलोक, गृह-कुटुंब अपना सर्वस्व भगवान के चरणों में न्यौछावर कर देना। इसका नाम है शरणागति।**

सन्तों को नमन करना कभी मिथ्या नहीं होता है। प्रभु का स्मरण करते हैं, भक्तिभाव से भजन करते हैं, गुरु वन्दना करते हैं, तपस्या करते हैं, सत्संगति में रहते हैं, उसका फल नहीं मिले, यह कदापि सम्भव नहीं, ऐसा कभी हो ही नहीं सकता। यदि फल नहीं मिलता है, इसकी पृष्ठभूमि में भी कोई कारण है। मैं आपको समझाता हूं। जब हम एडवांस ले चुके हैं, ऋण ले चुके हैं, यही बहुत बड़ी समस्या है। पहले लिए हुए ऋण का भुगतान करो। फिर कुछ प्राप्त करने की कामना करो। जब तक आपका ऋण नहीं चुक पाएगा, तब तक आपको कुछ भी प्राप्त होने का अधिकार नहीं है। आप किसी साहूकार के पास चले जाओ, परचून वाले के पास चले जाओ, वे सभी एक उत्तर देंगे। पहले का ऋण चुकाओ, फिर कुछ पाओ। मेरे कहने का तात्पर्य है कि ऋण मुक्ति के पूर्ण होने पर ही आपको कुछ प्राप्त हो सकता है, इससे पूर्व आपको प्राप्ति की लालसा नहीं रखनी चाहिए।

मेरे कहने का तात्पर्य यही है कि लालच के वशीभूत कोई भी प्राप्ति की कामना लेकर इस द्वार पर न आये। लालच के वशीभूत होकर कोई इस दर पर न आये। लालच स्वयं सिद्ध हो जाएगा। जब कल्पवृक्ष की छाया में चले जायेंगे, हर वस्तु अपने आप प्राप्त हो ही जाएगी। नदी के किनारे पर चले जायेंगे, नहायेंगे भी, पानी भी पीयेंगे और भर के भी ले जायेंगे। नदी के किनारे पहुंचो। नदी का किनारा है परमात्मा की शरण, नदी का किनारा है सत्संग में रूचि, नदी का किनारा है सन्तों पर विश्वास। वह भगवान् है। शायद प्रेमियों ने न देखा हो, पर संतों पर विश्वास कर लेना परमात्मा की प्राप्ति है।

भगवान ने कहा है-

मो से अधिक सन्त कर लेखा। (मानस)

मानव को जीवन में दृढ़ आस्था रखनी चाहिए। आस्था और विश्वास ही ईश्वर की सन्निधि देता है। भगवान् कहते हैं कि जिसने संतों को देखा है, मुझसे अधिक उन पर विश्वास किया

है, मुझसे अधिक उनको सम्मान दिया है। उनको मेरा स्वरूप ही उन्होंने मान लिया है, मैं निश्चित रूप से प्राप्त हो जाया करता हूं। यदि ऐसा विश्वास नहीं बनता, भले ही राम या कृष्ण या शिव या गुरु का नाम जपते रहो जपना व्यर्थ है, कुछ भी प्राप्ति नहीं हो सकती। प्राप्ति आस्था में है, प्राप्ति दृढ़ विश्वास में है, जिसमें दृढ़ विश्वास है, वह निश्चित प्राप्त करता है।

हमने अनेक बार सत्संग में कहा है कि सत्संग जीवन में ईश्वर की सन्निधि देता है। भगवान् श्रीराम ने भी कहा है :

निशिचर हीन करो महि।
भुज उठाय प्रण कीन्ह। (मानस)

हे ऋषि सुतीक्ष्ण! हम यह भुजा उठाकर प्रण कर रहे हैं कि इस धरती को राक्षसहीन कर देंगे। यह प्रसंग उस समय का है, जब भगवान राम और लक्ष्मण, ऋषि के साथ जंगल में गये और भगवान राम ने पूछा कि यह हड्डियों का ढेर किसका है? ऋषि कहने लगे कि यह मत पूछिये। हे ऋषि! शंका हो गई है कि यह पर्वत नहीं है, कुछ और नजर आ रहा है। ऋषि बोले, हां महाराज, ये ऋषियों की हड्डियां हैं। कहने लगे, इतनी हड्डियां? ऋषि कहने लगे, हां यह हड्डियों का ही ढेर है। क्या ऐसा कोई नियम बना लिया है कि संतों की हड्डियां यहां डाली जायें। ऋषि ने कहा कि राक्षस लोग ऋषियों का भक्षण कर जाते हैं और हड्डियों को यहां फेंक देते हैं। उनका यह ढेर पड़ा हुआ है। उस समय भगवान राम प्रण करते हैं-

निशिचर हीन करो महि।
भुज उठाय प्रण कीन्ह॥ (मानस)

उन्होंने अपनी भुजाओं को उठाकर प्रतिज्ञा की कि हे ऋषि, सकल मुनिन्ह के आश्रमन्ह जाय-जाय सुख दीन्ह! मैं जब तक इन राक्षसों का विनाश नहीं कर दूंगा, तब तक मुझे शान्ति नहीं मिलेगी, इसी प्रकार हमने भी विशेष उत्सवों पर, समारोहों पर उस प्रभु के नाम पर यह प्रतिज्ञा की कि हमें तब तक शान्ति नहीं मिलेगी, जब तक इस स्थान अर्थात् श्री सिद्धदाता आश्रम को मानने वाले हर प्रकार से सुखी नहीं होंगे।

मेरे भक्तो! मैं परमात्मा नहीं हूं, मैं ईश्वर नहीं हूं, मैं उसका साधारण नौकर हूं, किन्तु मालिक का चतुर्थ श्रेणी का नौकर भी दृढ़ता से कह सकता है। इसलिए मैं भी आपसे बार-बार दोहराता हूं कि जब तक आपके जीवन में परम शान्ति प्राप्त नहीं होगी, तब तक इस आश्रम की आस्था अपूर्णनीय है, अगर वह विश्वासपात्र नौकर हो, मालिक की ओर से वह कह सकता है जैसे अंगदजी ने कह दिया-

जो मम चरण सकहि सठ टारी।
फिरहि राम सीता मैं हारी॥ (मानस)

अंगद की क्या ताकत थी कि जगत् जननी की बाजी लगा दे? पर उसको अपने मालिक पर विश्वास था कि मैं पैर को सभा में रोप दूंगा, कोई हटा नहीं पाएगा। वरना अंगद का यह कहना ही नहीं बनता कि मैं सीताजी को हार जाऊंगा और राम वापिस

चले जायेंगे। उसको किसी तरह का अधिकार नहीं हो सकता, सीता माता को हारने का। सीता मैया को बाजी पर लगाने का। पर उसको मालिक पर विश्वास था। अंगद की तरह हमें मालिक पर पूरा भरोसा है और रहेगा। उसी के बल पर हमने हाथ उठाकर प्रतिज्ञा की कि जो सच्चे दिन से इस स्थान का अनुसरण करता रहेगा, उसकी आधि, व्याधि, दरिद्रता और अन्नपूर्णा की कमी उसके घर में नहीं रहेगी। पर मेरे प्रेमियो! इस बात के लिए ही मत आओ कि मुझे अमुक काम ही चाहिए। फिर हमारी सरकार रूठ जाती है। भले आदमी! तूने प्रतिज्ञा की, पर उस प्रतिज्ञा का क्या बना? इसलिए निश्छल भाव से मेरे प्रेमी आते रहें। हमें तब तक शान्ति नहीं मिलेगी, जब तक यहां का अनुसरण करने वाले प्रेमी हर प्रकार से सुखी-सम्पन्न न होंगे। पर उस पर ध्यान मत रखिये। ध्यान रखिये सत्संग पर, ध्यान रखिये अनुसरण पर, ध्यान रखिये स्मरण पर, ध्यान रखिये आस्था पर। आस्था को मत डगमगाओ, क्योंकि आस्था के डगमगाने के बाद कुछ नहीं मिलता। आदमी हीन भावना में आ जाता है और नास्तिकता धारण कर लेता है। यह मेरा कहना है।

मानव जन्म का परम लक्ष्य एवं परम सत्य, परम कर्तव्य परमात्मा की प्राप्ति है। अनेक योनियों में जन्म लेने के बाद अनेक यातनाओं की मुक्ति के बाद मानव जीवन मिलता है। प्रत्येक योनि में देह की स्थिति भिन्न-भिन्न रहती है किन्तु आत्मा एक ही है। श्रीमद्भगवत् गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को आत्मा के संदर्भ में समझाते हुए कहा है-

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारूतः॥

(गीता, 2/23)

अर्जुन! यह आत्मा अजर, अमर है, अविनाशी है। इस आत्मा को तीक्ष्ण से तीक्ष्ण हथियार भी काट सकते हैं और न इस आत्मा को अग्नि ही जला सकती है। न इस आत्मा को जल ही गला सकता है और नहीं इसे हवा ही सुखा सकती है। यह अच्छेद्य है, यह अदाह्य है, यह अक्लेद्य है, यह अशोष्य है। यह आत्मा शरीर धरण करती है, जैसे हम नये-नये वस्त्र धारण करते हैं, वैसे ही आत्मा भी नयी-नयी आकृति को धारण करती है। आत्मा अजर है, अमर है, यह मरती नहीं है, परन्तु यह समय-समय पर हर योनि में प्रादुर्भूत हो जाती है, जन्म ले लेती है, प्रवेश कर जाती है। आत्मा सबसे समान रूप से स्थित है, परन्तु शरीर अलग-अलग तरह के हैं। इन 84 लाख योनियों में मानव योनि के अतिरिक्त कर्म करने की ताकत किसी योनि में नहीं है। केवल भोग भोगने की ही ताकत है। मानव शरीर में अपने ही बीते कर्मों का भोग भोगना ही पड़ता है। नये-नये कर्म करने की ताकत इसमें मौजूद है। सब योनियों में मानव योनि प्रधान योनि मानी गई है। ऐसे प्रमुख शरीर को प्राप्त करके व्यसनों में, निरर्थक वातावरण में यदि व्यतीत करते रहेंगे, हमारा देवदुर्लभ मानव शरीर बेकार चला जायेगा। हमारा एक-एक पल, एक-एक क्षण घाटे में जा रहा है, नुकसान में जा रहा है।

यह संसार हाट बनिया की, सौदो बहुत बिकायो।
चतुर माल चौगुणो कीनो, मूरख मूल गंवायो।

यह भौतिकवाद का जो संसार है, यह तो एक दुकान है और दुकान में व्यापार होता है और इस दुकान में सौदा बहुत बिका है। यहां अनेक प्रकार के सौदे खरीद लीजिए।

कुछ समय पूर्व स्थान-स्थान पर मेले आयोजित होते रहते थे। आज भी होते हैं और इन मेलों में दुकानें लगा करती थी। बड़े-बड़े मोटे शब्दों में लिखा जाता था, हर माल मिलेगा ढाई आना। आज भी बीस से पचास प्रतिशत तक की छूट लिखी रहती है। ढाई आने से मेरा तात्पर्य यह है कि चाहे हम संसार का काम करें, तब भी श्वास खर्च हो रही है अर्थात् जीवन कम हो रहा है। चाहे हम लड़ाई, दंगा, आंदोलन, फसाद करें, यह श्वास खर्च हो रहे हैं। यदि प्यार से किसी से मिलेंगे, श्वास खर्च हो रहे हैं। यज्ञ करने बैठे, श्वास खर्च हो रहे हैं। हम प्रभु के नाम का स्मरण करें, श्वास खर्च हो रहे हैं। श्वासों को खर्च होना ही है। समय व्यतीत हो रहा है, जीवन कम होता जा रहा है। अब इसमें चातुर्य यही है कि चतुर व्यक्ति अपने कर्मों का फल भोगता है, और नए शुभ कर्म करता है, जिसका लाभ उसको कई गुना मिलता है।

वह व्यक्ति निपुण कहलाता है जो इन श्वासों को ईश्वर के स्मरण और गुरु वन्दना में लगाता है। वह दोनों प्रकार के सुख प्राप्त कर सकता है, भौतिक सुख भी और आध्यात्मिक सुख भी। वह व्यक्ति निरा मूर्ख है, जो अपनी सांसों को केवल भौतिकवाद के पीछे खर्च कर रहा है। भौतिकवाद में भी सुख है, किन्तु हर सुख क्षणिक है और इसका फल नष्टप्रद है। मानव केवल भौतिकता में डूबे रहने से गुरु कृपा प्राप्त नहीं कर सकता है और गुरु की कृपा के बिना ईश्वर की सन्निधि नहीं मिल सकती है। भौतिकवाद के दुश्चक्र में फंसकर मानव अपना समय गंवा रहा है, जीवन पूरा कर रहा है। जबकि उसे यह विदित है कि यह भौतिकवाद और ये भौतिक वस्तुएं उसके साथ नहीं जायेंगी।

॥परम तत्त्व विष्णु ॥

जगद्गुरु रामानुजाचार्य **स्वामी श्री राजनारायणाचार्य जी महाराज**
पीठाधीश्वर - श्री लक्ष्मी वेंकटेश्वर देवस्थानम्, भक्ति वाटिका, देवरिया, उ.प्र.

सम्पूर्ण वेद, इतिहास, पुराण, रामायण, मीमांसा, प्रस्थानत्रयी आदि दिव्य ग्रन्थों का अन्तिम निर्णय है कि सर्वशक्तिमान घटितघटना पटीयान विष्णु ही परमतत्त्व हैं, क्योंकि वे सगुण तो हैं ही गुणों से परे भी हैं। ज्ञातव्य है कि गुण तो प्रकृति का विषय है, जबकि भगवान् विष्णु प्रकृति के नियन्त्रक, सर्वज्ञ, सर्वेश्वर, सर्वोपास्य सच्चिदानन्द भगवान् हैं ।

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति।

(तै. उपनिषत् 3.1.1)

उन्हीं भगवान् नारायण 6 विष्णु 8 को श्रुतियाँ 'सत्' कहकर वर्णन करती हैं। श्रुतियाँ बताती हैं कि 'सत्' ही सभी का मूल है। महाप्रलय के समय सभी वस्तुओं का बीज ' सत्य' में ही शयन करते हैं।

कथमसतः सज्जायेत।

(छान्दोग्य उपनिषत् 6.8.4)

सन्मूला सोम्येमाः सर्वा प्रजाः सदायतनाः सत्प्रतिष्ठः।

(छान्दोग्य उपनिषत् 6.8.4)

भगवान् नारायण जिन्हें व्यापक होने से श्रुति विष्णु कहती हैं, जिनका परमपद सर्वदा अच्युत पद है, जिसे श्रीवैकुण्ठ, साकेत, गोलोक नाम से जाना जाता है, उस दिव्य परमपद का दर्शन दिव्य सूरि जन नित्य किया करते हैं।

तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।

दिवीव चक्षुराततम्। (ऋग्वेद 1.22.20)

'विष्णोःसकाशादुद्भूतं जगत्तत्रैव च स्थितं।

स्थितिसंयमकर्त्तासौ जगतोस्यजगच्चसः॥'

ध्यातव्य है कि 'विष्लृव्याप्ता' धातु से 'विष्णु' शब्द व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होता है।

'अन्तर्वहिश्च तत्सर्वं व्याप्यनारायणःस्थितः'

'सर्वत्रासौसमस्तांच वसत्यत्रेति वैयतः।

तत्सर्ववासुदेवेति विद्वद्भिःपरिपठ्यते॥

अकारपदवाच्य विष्णु के द्वारा ही जगत् की सृष्टि, पालन, संहार के साथ ही मोक्षदा प्रतिपादन होता है।

'अव रक्षणगणहिंसादि'

'अइतिब्रह्म'

'अइतिभगवतो नारायणस्यप्रथमाभिधानम्'

'अकारोविष्णुवाचकः'

'अक्षराणामकारोस्मि'

जिस प्रकार से व्यंजन वर्ण 'क' में स्वरवर्ण 'अ' व्याप्त है, उसी प्रकार से सम्पूर्ण जगत् में 'विष्णु' व्याप्त हैं। वर्णाम्नाय का प्रथम वर्ण 'अइउण' का 'अ' है जो 'विष्णु' को ही परतत्त्व बताता है। उन्हीं भगवान् श्रीमन्नारायण को ही सन्त-महात्मा वैष्णव ब्राह्मण सुधीजन अवतार काल में श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि नामों से वर्णन करते हैं।

एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति। (ऋग्वेद 1.164.46)

एकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति। (ऋग्वेद 10.114.5)

प्रायः सभी लोग जानते हैं कि परमतत्त्व नारायण ही अवतार काल में मत्स्य, कूर्म, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, कृष्ण, कल्कि आदि स्वरूप धारणकर उद्दण्डों को दण्ड देकर उसे पुनीत करते हुये भक्तों को मोद प्रदान करते हैं, ये सभी उनकी दिव्य लीला है।

'लयनंलाति' जैसे स्वर्ण चेन, कंगन, अंगूठी, तागड़ी, हार, बाजूबन्द आदि विविध प्रकार की आकृति धारण करने पर भी मूल रूप से स्वर्ण ही रहता है, ठीक उसी प्रकार से भिन्न-भिन्न आकृतियों में भी परमतत्त्व विष्णु-नारायण तो नारायण ही रहते हैं जिन्हें बुद्धि के तर्क से कभी भी नहीं जाना नहीं जा सकता, क्योंकि तर्क की तो कोई प्रतिष्ठा ही नहीं है -

तर्काप्रतिष्ठानात् (ब्रह्मसूत्र 2.1.11)

नैषा तर्केण मतिरापनेया (कठोपनिषद् 1.2.9)

श्रीभगवान् श्रीमन्नारायण के दिव्य स्थैर्य, धैर्य, लावण्य, सौंदर्य, माधुर्य, कारुण्य का चिन्तन करना ही श्रेयमार्ग है। किंचित् मनन करने से ही आँखों से प्रेमाश्रु छलकने लगता है, हृदय गद्गद हो जाता है, शरीर में रोमांच होने लगता है। पूर्ण विश्वास एवं श्रद्धा के साथ सत्संग में कथा सुनने से तथा अनुकीर्तन करने से भावनायें दृढ़तर बनकर हृदय को भक्ति भाव से प्लावित कर देता है।अनायास ही दिव्य सौंदर्य सम्पन्न श्रीभगवान् का ध्यान होने लगता है, जिनका आस्वादन कितना मधुर है। आप सभी आस्वादन करें-

अनवधिकातिशयसौंदर्यहृताशेषमनोदृष्टिवृत्ति!

स्वलावण्यामृतपूरिताशेषचराचरभूत -संजात!

अत्यद्भुताचिन्त्ययौवन! पुष्पहाससुकुमार!

पुण्यगन्धवासितानन्तदिगन्तराल!

त्रैलोक्याक्रमणं प्रवृत्तगम्भीरभाव!

करुणानुरागमधुरं- लोचनावलोकिताश्रितवर्ग!

तिरुप्पावै दिव्यग्रन्थ का प्रतिपाद्य विषय

जगद्गुरु रामानुजाचार्य **स्वामी श्री श्रीधराचार्य जी महाराज**
पीठाधीश्वर - अशर्फी भवन, अयोध्या जी (उ.प्र.)

परम भक्तिमती श्रीगोदाम्बा जी के दो अनुपम ग्रंथ हैं-

तिरुप्पावै और नाच्चियार तिरूमौलि। श्री लक्ष्मीजी की अवतार भूता (भूदेवी) भगवान रंगनाथ के मंगलमय-दिव्य विग्रह में अंतर्हित हो जाने वाली श्रीगोदाम्बा जी का प्रथम दिव्य प्रबन्ध तिरूप्पावै वेद- तत्वों से गुम्फित अनुपम कृति है।

तिरुप्पावै (श्रीव्रत) प्रबंध की अवतारिका श्री गोदाम्बा जी अपनी विलक्षण भक्तिमता, दिव्यज्ञान और सौम्य स्वभाव के कारण सभी सूरियों में अग्रगण्य हो गई हैं। जैसे माता पिता छोटे पुत्र को सर्वाधिक स्नेह देते हैं उसी प्रकार सबसे छोटी होने पर श्रीगोदा जी को सभी आलवारों का स्नेहदान मिला। तिरु अर्थात् श्री और पावै अर्थात् व्रत। तिरुप्पावै द्रविड़ भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है श्रीव्रत। गोदाम्बा जी का यह पाद्यात्मक दिव्य प्रबन्ध मधुर गेय और अमृत धारावत् माधुर्य से ओतप्रोत है।

तिरुप्पावै में व्रज की गोपियों की भांति कत्यायनी देवी के व्रत की तरह वर्णन किया गया है। जिस प्रकार गोपियों ने श्रीकृष्ण को पतिरूप में प्राप्त करने के लिये विरह व्यथा से कातर होकर व्रतानुष्ठान किया था, उसी प्रकार विरह वंदना से संतप्त गोदाम्बा जी ने स्वयं को गोपी, श्रीविल्लीपुत्तूर को वृंदावन कावेरी को यमुना जी भगवान रंगनाथ के अर्चाविग्रह को श्रीकृष्ण और आलवरों को सखियों के रूप में अनुभव कर तीस गाथाओं वाले तिरूप्पावै व्रत का अनुष्ठान किया। भगवान के मधुर और दिव्य चरित्रों की मणिमाला से नित्य भाव विभोर हो विधि-विधान से गोदाम्बा जी प्रतिदिन एक मंगल गाथा भगवान को सुनातीं। भगवान का हृदय प्रेममय करूण गाथाओं से द्रवित हो गया। गोदाम्बा जी की अनन्य भक्ति से रीझ कर भगवान श्रीरंगनाथ जी ने प्रतिरूप में मनोवाञ्छा प्रदान की। तिरुप्पावै तीस गाथाओं का छन्दबद्ध दिव्य प्रबंध है। इन छन्द में गाथाओं को द्रविड़ भाषा में **पाशूर** कहते हैं। यह प्रबंध समस्त पापों को नाश करने वाला और भगवान के चरणारविन्दों में अविचल भक्ति प्रक्षन कराने वाला है। इसका पठन, श्रवण सभी के लिये अभीष्ट फलप्रदायी है।

इस व्रतानुष्ठान का प्रतिपाद्य विषय यह है कि व्रज में भक्ताग्रेसर गोपियों से विहरण करने वाले श्री कृष्ण को देखकर और मूढ़ता वश उसे अनुचित मानने वाले अपने घर की गोप बालिकाओं को कोठरी में बंद कर दिया। बेचारी गोपियाँ अपने मन में ही भगवान का ध्यान करती हुई पड़ी रहीं। इस दुराभाव के कारण देवयोग से ब्रज में वर्षा नहीं हुयी और दुकाल पड़ गया। घास और जल के आभाव से गौ, पशु-पक्षी आदि भी संतप्त हो उठे। तब गौपवृद्धों को अपनी इस महान भूल का बोध हुआ और इस संकट से बचने का उपाय सोचा कि सभी गोप बालिकायें मिलकर वर्षा के लिये व्रत अनुष्ठान करें। गोपियों ने अपने ईष्ट भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान करते हुये यमुना जी में स्नान कर पवित्र हो व्रत अनुष्ठान किया। भोर में ही गोपियां उठकर और अपनी अन्य सखियों को जगाकर सब मिलकर श्रीकृष्ण भवन में जाकर पहले द्वारपाल को जगाती और फिर नन्द, यशोदा, बलराम जी और नीलादेवी को जगाकर और फिर श्रीकृष्ण भगवान को भी जगाकर व्रत की अभीष्ट वस्तुओं को मांगकर और विशेष सम्मान प्राप्त कर आनंदित हो गयीं। ब्रज में सुकाल आ गया।

गोपियों के इस दिव्य चरित्र का वर्णन इन दिव्य-प्रबंधों में किया गया है। अर्थात् गोदाम्बा जी भावना से स्वयं एक गोपी बनकर उन्हीं के सदृश गुण, आदर्श, आचरण वाणी से इस चरित्र का वर्णन करती हैं। स्वयं जागकर भगवान को जगाकर पुरुषोत्तम विरद विभूति भगवान की दिव्य अनुभूति करने में भाव मग्न हुयी। पुरुषों की अपेक्षा भगवदानुभव करने में स्त्रियों की सहजता है, अतः कई दिव्य सूरियों ने अपने पुरुषत्व भाव का परित्याग कर स्त्री भावना को अपनाकर भगवदानुभव की अनुभूति की है। आलवारों ने स्वयं को गोपियों की भांति- नायिका का रूप माना। (गोपी अर्थात् गो-इंद्रियां, पी-पान करना) जो अपनी संपूर्ण इंद्रियों, मन, वचन, भाव से भगवान के रूप, रस, गुण, भाव का अनुभव करें, पान करें, वही गोपी है। रामावतार में सभी ऋषि-मुनियों ने भी कृष्णावतार में कृष्ण- प्रेम का पान करने के लिये गोपी रूप धारण किया था। स्त्री रूप में ही अवतीर्ण गोदाम्बा जी भगवान का विलक्षण अनुभव करती हुयी दूसरे दिव्य सूर्यों से आगे बढ़ गई। परम कारूणिक भगवान की निरहेतुकी कृपा से जग जाने पर ये आवलावार, अज्ञान निद्रा को छोड़कर जाग गये अर्थात् विलक्षण ज्ञानी भक्त बन गये।

तिरुप्पावै प्रबंध का वैभव विलक्षण है। प्रत्येक वैष्णव मंदिर में एवं घर में भी इसका पाठ और शांति से ही पूजा पूर्ण मानी जाती है। भाष्यकार भगवद् पाद श्री रामानुजाचार्य स्वामी जी सर्वदा इस दिव्य प्रबन्ध का अनुसंधान करते थे, जिससे आपका शुभ नाम पड़ा **'तिरुप्पावै-जीयर'**। द्रविड़ भाषा में महात्मा को जीयर कहते हैं।

सर्वोत्कृष्ट मानवीय गुण

महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री
(राष्ट्रपति सम्मानित)
प्रधान संपादक- "भारती" संस्कृत मासिक
(भूतपूर्व अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी तथा निदेशक-संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार)

योगेश्वर श्री कृष्ण के मुख से अमर उपदेश ग्रंथ श्रीमद् भगवद् गीता में उत्कृष्ट जीवन मूल्यों के जो आदर्श स्थान स्थान पर बतलाये गये हैं वे आज भी इतने प्रासंगिक हैं कि उनसे अमूल्य शिक्षा ली जा सकती है। वे हमारी दैवी संपदा हैं।

उदारहणार्थ बारहवें अध्याय में श्रीकृष्ण अपने सच्चे अनुयायी के जो गुण बतलाये हैं वो आज के परिप्रेक्ष्य में कितने प्रासंगिक हैं यह स्वत: ही स्पष्ट हो जाता है। वे कहते हैं-

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः।।12.16।

इस श्लोक में छ: ऐसे गुण बतलाये हैं जो उत्कृष्ट मानव मूल्य और आदर्श मानव के गुण हैं। उसे अनपेक्ष होना चाहिये। यहां वे निरपेक्ष शब्द का प्रयोग नहीं करते हैं। अनपेक्ष शब्द कहते हैं। आज की सबसे बड़ी समस्या यही है कि व्यक्ति सबसे कोई न कोई अपेक्षा करता है। वोट की अपेक्षा करता है, युवा रोजगार की, नागरकिता सुविधाओं की, कुछ लोग प्रसिद्धि की, यहां सब कि परिवार में बिना एक दूसरे से कहे परिवार जन सबसे आदर की, प्रशंसा की, धन की, सम्मान की, कोई न कोई अपेक्षा करते हैं। उसके न मिलने से अनेक समस्याएं पैदा हो जाती हैं। आप जो ही अनपेक्ष हुये सब समस्याएं समाप्त हो जाऐंगी।

दूसरा गुण है शुचि याने पवित्र। यहां साफ सुथरा होने की बात नहीं की गई है। शुचि की परिभाषा है ईमानदार, धन की दृष्टि से पवित्र। शुचि की परिभाषा मनु ने स्पष्ट शब्दों में की है-

सर्वेषां एव शौचानां अर्थशौचं परं स्मृतम् ।
योऽर्थे शुचिर्हि स शुचिर्न मृद्वारिशुचिः शुचिः

शुचि का मतलब है भ्रष्टाचार से बिल्कुल निर्लिप्त, अर्थ शुद्धि मानना। आज भ्रष्टाचार समाज में रच बस गया है। उसकी समाप्ति कितनी आवश्यक है, स्वत: स्पष्ट है।

तीसरा गुण है दक्ष। यहां दक्ष का तात्पर्य चतुर्थ होना नहीं है, दक्षिण स्वभाव का होना है। वाम और दक्षिण दो तरह के स्वभाव होते हैं। वाम याने प्रतिकूल, निगेटिव। दक्ष या दक्षिण पॉजिटिव। अनुकूल सही दृष्टिकोण वाला व्यक्ति सकारात्मक दक्ष कहा गया है। इसी प्रकार उदासीन का अर्थ है बिना पूर्व गृह के स्पष्ट सोच वाला व्यक्ति । लाग लपेट से दूर। आज की प्रमुख समस्या यही तो है कि हमारे अपने पूर्वाग्रह और मत मतांतर बने रहते हैं। उनके विपरीत होते ही हम या तो खुश हो जाते हैं या तो निराश। समाज की सभी समस्याएं इसी से पैदा होती हैं। आप पूर्वाग्रह से दूर हो जाएं, उदासीन हो जायें तो कोई समस्या ही नहीं रहेगी। राजनीति में तो इस समस्या ने ही सारी कठिनाईयां पैदा की हैं यह आप स्वत: समझ सकते हैं।

पांचवां गुण बतलाया गया है- गतव्यथ:। अर्थात् किसी बात के होने या न होने से किसी प्रकार की व्यथा या चीज का अनुभव न करने वाला। आप समझ ही सकते हैं कि हमारी प्रमुख समस्या है बात बात में किसी का अनुभव करना, मन चाहा काम न होने पर व्यथा का हो जाना। किसी ने कुछ कह दिया तो व्यथा हो जाना, कोई हमसे आगे निकल गया तो व्यथा हो जाना। ऐसी व्यथाएं यदि आपमें नहीं हैं तो आप कितने उत्कृष्ट हैं यह आप आसानी से समझ सकते हैं।

छठा विशेषण है सर्वारम्भ परित्यागी। यह प्राचीन भाषा की अभिव्यक्ति है। इसका तात्पर्य है तरफ तरफ की योजनाएं बनाने की आदत से दूर। अपनी ओर से नई योजना गणना आज के चतुर नागरिकों की तो आदत ही बनी हुई है। यदि आप राजसेवा से निवृत हुये तो शांति से बैठने की बजाय कोई नया काम शुरु करेंगे, नई संस्था बनाकर कमाई का जरिया ढूंढेंगे या अपनी ओर से कोई नया धंधा शुरु करना चाहेंगे। इस प्रकार के किसी भी खटके से दूर अपने मार्ग पर चलने वाले को उत्कृष्ट बतलाया गया है इस विशेषण के द्वारा। ऐसे खटकेबाज व्यक्ति अधिकतर जो अपना ही भला करते हैं, कुछ समाज का भी भला करते हों तो बात अलग है।

यह विवरण स्पष्ट करता है कि मानव चरित्र का गहन विश्लेषण कर उत्कृष्ट जीवन मूल्यों की सम्पदा का उपदेश जो इस श्लोक में दिया गया है आज भी उतना ही प्रासंगिक है। इस प्रकार के गुणों को दैवी संपदा माना गया है। इनके विपरीत नकारात्मक और दुष्ट प्रवृतियों को आसुरी संपदा शब्द से अभिहित किया गया है। गीता में अनेक श्लोकों में इस प्रकार के उत्कृष्ट मानवीय गुणों का अभिलेख हमें प्रदान किया है। जो हर युग में प्रासंगिक लगते हैं। यहां उनमें से सार्वाधिक प्रासंगिक मूल्यों का एक निदर्शन प्रस्तुत किया गया है।

INDIA'S RESURGENCE IN THE 21ST CENTURY

Dr. Karan Singh
Former Member of RajyaSabha

Over the last century science and technology, have so accelerated the speed of time that the future is upon us before we realize that the past has disappeared. Indeed the old saying that 'you cannot step into the same river twice' has now to be changed. In the new millennium we cannot even step into the same river once, because in the very act of stepping in, the river has already changed. The speed with which the information technology revolution is transforming our lives, is quite astounding. In this context our thinking also has to undergo a paradigm shift. It is not as if we can give up planning for the future; it simply means that our responses and reflexes have to be much swifter than before, and our approach to the many social and economic problems must more flexible than in the past. As an eminent contemporary philosopher, Pir Vilayat Khan, has said "The future is not just waiting to happen; instead it is taking shape right here and now in the attitudes we hold, the choices we make and the values we cherish". Humanity holds in its hands and extraordinary precious opportunity to shape the future tomorrows on this planet. Will there be a global shift in the 21st century, or are we hoping that there will be such a shift? There is a significant difference between the two approaches. Quite frankly, the former appears to me prima facie to be somewhat over optimistic. If we look at the figures of economic growth in the broader context of the Human Development Index, it will be seen that, with a few distinguished exceptions, the countries of Asia still lag far behind Europe and North America. Among several other factors, this is the result of centuries of colonial domination and ruthless exploitation by Western powers. In this context, it would pertinent to recall that one of the five dreams of the great savant, Sri Aurobindo, on the occasion of India's Independence in 1947, was the resurgence of India and her return to her great role in the progress of human civilization. We need a new approach for achieving this resurgence in India in the 21st century. Let us consider the two divergent views given by two great philosophers of the twentieth century - Sri Aurobindo and Arthur Koestler. Sri Aurobindo said that man is an evolving being, between the animal and the divine Arthur Koestler, on the other hand, said that man is programmed to destroy himself because there is inadequate linkage between his thinking and feeling functions. Because of this dichotomy (between thinking and feeling) human race, according to Koestler, will self-destruct. The jury is still our on both these visions of the future of human race, and we will have to wait and see as to what will happen eventually. The human race is much older than the human civilization, which is only about 6000 to 7000 years old. The first major civilization was in Egypt, at about 5000 BC, and since then, the human civilization has taken a tortuous path on planet earth. But it was only in the 20th century that miraculous achievements due to science and technology have changed the very face of human civilization. However, along with

"Among several other factors, this is the result of centuries of colonial domination and ruthless exploitation by Western powers. In this context, it would pertinent to recall that one of the five dreams of the great savant, Sri Aurobindo, on the occasion of India's Independence in 1947, was the resurgence of India and her return to her great role in the progress of human civilization."

these achievements, we have the other side also. This includes three major threats: - First is the prospect of a nuclear disaster — There are thousands of nuclear weapons on planet earth, and each of these is capable of much greater destruction than the nuclear bombs that had destroyed Hiroshima and Nagasaki. The nuclear threat has not ended with the cold war as seems to be the popular perception, but is everywhere and has reached our very threshold.

- The second threat is the population explosion. - And the third threat is ecological destruction of these, the third is, in my view the most lethal. Pollution has taken unprecedented dimensions in the 20th century. The earth has been poisoned due to pesticides and chemicals. The air has been polluted to lethal levels. The Kyoto protocol which was adopted in 1997, has now been denounced by the US. This was one of the most regressive steps against the protection of environment since the Rio Conference of 1992. The Rio plus-five in 1997 and Rio plus ten scheduled in 2002 and other international declarations have been made on reversing air pollution. But little has been achieved on the ground. Water has been polluted. For example, Yamuna has become a virtual sewer and the Ganga, which is supposed to purify all, has also been highly polluted. The question is how do we move now towards ecological security? And what is the role of faith in achieving ecological security? In this connection a major inter-faith meeting was held in the town of Assisi in Italy recently, in which five major religions of the world including Buddhism, Christianity, Hinduism, Islam and Judaism had participated and had adopted a unanimous declaration. Subsequently' four more religions, namely, Sikhs, Jainism, Bahai and Taoism added their declarations. These nine declarations were compiled, in a book called Religion & Conservation. However, one of the most comprehensive statements regarding ecological conservation in any religious literature so far has been given in Bhoomi Sooktham of the Atharva Veda. This consists of 63 verses on environmental values and faith. Most of these verses invoke mother earth to give us prosperity, joy and bliss. Vedas and Upanishads were inspired for the glory of the Nature. Indian civilization was thus born in nature unlike the Greek civilization which was born in the cities. Ours is, therefore, an Aranyaka civilization which can only be measured by the rod of the Himalayas. The World Charter for Nature as adopted by the U.N. in 1982 represents a set of Directive principles which are based on the fact that civilization is rooted in nature and we must live in harmony with nature. All of us who live in the cities want to drag ourselves out from the suffocation of the city and go out to Nature and see the stars. Nothing is more dramatic than tke sight of stars, Anantha Koti Brahmanda.

But despite all this natural beauty, our small

cities have now become vast dung heaps, and slums are growing everywhere because of the growing population. The resulting desertification and deforestation, in turn, has lead to social and psychological tensions. In fact growth of population has been a major reason for ecological destruction. Can faith exert any constructive impact in reversing this ecological destruction? Faith is normally concerned with individual salvation. But faith and religion must look at preserving nature and reversing ecological destruction. Faith must play a proactive role, not only in saving the individual, but also in saving the natural surroundings in which the individual lives. Atman Mokshatam Jagat Hitayche-Salvation of the individual soul must be accompanied with the salvation of the world. Unless religion concerns itself with both individual salvation as well as nature's protection, there is little hope eor the survival of the planet earth. The Temples, for example, instead of giving sweets as prasada should give a tree sapling, which could be planted and help in conserving nature. In the Upanishads it is said that the same light that illumines the Universe also illumines our consciousness. This is the essence of Indian civilization. That which is shining, causing everything else to shine, that is God. That is the Noor-e-Ilahi of Islam, the Atman of Hinduism, the light that lighth every man that cometh in the world, of Chriastinity. The Earth Charter gives an integrated ecological vision for civilization. But while there is no lack of ideas and documents, the question is how to put these ideals into practice. We have crossed the six billion population mark out of which India has contributed one billion. The planet earth is becoming over-populated every day. Our planet earth appears to be a tiny speck of light when viewed from outer space. This light of the planet earth is the same light that is in each one of us. I would, therefore, urge that a creative linkage is forged between religion and environment. Only then we can hope to achieve the goal of India's resurgence in the new century.

This brings me to the whole phenomenon globalization, which is now an irreversible process and has its impact on India. The very nature of the technological revolution, specially in the sphere of Information Technology, assures that. However, while globalization marks evolution and carries many benefits in terms of market liberalization, free movement of goods and services, and a worldwide explosion of knowledge, it also has its darker side. Illegal trafficking in drugs, arms and human beings is becoming global, as are lethal pandemics, terrorism and fundamentalism. We will need all our wisdom to deal creatively with the globalization phenomenon, so that the positive aspects are strengthened and the negative kept under control. This is the real challenge of the 21st century, specially for India whose history and culture stretch far back into the remote dawns of human civilization which, incidentally, is why the much hyped 21st century is really no big deal as far as we are concerned! In the emerging global society, while economic growth is certainly a necessity, do we really have to accept the hyper-consumerism and ultra-promiscuity with which our electronic media is constantly bombarding us, along with lethal doses of horror and violence on cinema and television which surely are wrecking havoc with our collective consciousness, specially of younger, more impressionable generations? Do we not need to temper technology with wisdom, corporate profits with compassion, and military might with humanistic values. What we need is a sane and harmonious global society in the 21St century, not one in which the gap between rich and poor nations and societies continues to widen.

Those of us who are more fortunately placed, must never forget that one third of the human race, two billion human beings, most of them in Asia and Africa - eke out a precarious existence in the twilight zone between poverty and survival. The real challenge for humanity in the 21st century will be to ensure that abject poverty and deprivation around the globe are banished once and for all. Faith, however, is not enough by itself. We have to motivate our people to believe in themselves, in the pieservation and evolution of life, and in sustainable development. We must have faith in ourselves and in human destiny.. Between the two philosophies of Sri Aurobindo and Arthur Koestler, we have to choose the one who makes us believe in the evolution of human being and destiny of the human race. Robert Frost in his famous poem talks about the "taking the road less traveled" The road less travelled is the path of the good, which provides us the spiritual foundation for coping with the new century. Only on the basis of our spiritual foundation can India's resurgence be assured in the 21st century.

Sudershanalok_2023_Pages_48-65_sudershanalok 2020 13-Mar-23 10:44 AM Page 48

Sudershanalok_2023_Pages_48-65_sudershanalok 2020 13-Mar-23 10:44 AM Page 49

विश्व में मानवता एवं अध्यात्म का प्रचार-प्रसार

हम जीवन में कुछ भी प्राप्त कर लें लेकिन भगवान के नाम की औषधि तो गुरुजन से ही प्राप्त होती है। यही औषधि जो श्री गुरु महाराज जी ने हमें प्रदान की है, उन्हीं की कृपा से उसे दुनिया भर में प्रचारित प्रसारित करने का प्रयास किया जा रहा है। भारत के हरियाणा प्रांत स्थित फरीदाबाद जिले में श्री सिद्धदाता आश्रम से चली आध्यात्मिक सुगंध को दुनिया भर में प्रचारित प्रसारित करने के लिए अनेक देशों में पीठों की स्थापना की गई है जिनमें संयुक्त अरब अमीरात के दुबई, नाइजीरिया के लागोस व कानो, दक्षिण अफ्रीका के डरबन व जोहानिसबर्ग, हांगकांग, स्पेन में टेनेरिफ व एलिकांटे, न्यूजीलैंड में लिंकन व क्राइस्ट चर्च आदि का नाम मुख्य तौर पर लिया जा सकता है। ऐसे तो करीब 27 देशों से यहां भक्तों का आगमन हो रहा है। आप भी अपने नजदीकी आश्रम के केंद्र से जुड़ें।

Sudershanalok_2023_Pages_48-65_sudershanalok 2020 13-Mar-23 10:44 AM Page 50

लौकिक कष्टों से मुक्ति प्रदान कर रहा है श्री सिद्धदाता आश्रम

यदि आपको भी अपनी भौतिक जीवन की चिंताएं सताती हैं और आप आध्यात्मिक पथ का भी अनुगमन करना चाहते हैं तो फरीदाबाद से होकर गुजरने वाली अरावली पर्वत माला पर स्थापित संचालित श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) में आपका हार्दिक स्वागत है।

वैकुंठवासी गुरु महाराज स्वामी सुदर्शनाचार्य जी द्वारा स्थापित एवं वर्तमान आचार्य अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज द्वारा पोषित यह स्थान अपनी दिव्यता एवं भव्यता में अनिर्वचनीय है। इस केंद्र की स्थापना श्री गुरु महाराज जी द्वारा वर्ष 1989 में की गई थी।

बता दें कि एक बार जब वैकुंठवासी गुरु महाराज जी सूरजकुंड बड़खल मार्ग से कहीं जा रहे थे, तब उन्होंने यहां पानी का एक स्रोत देखा। उसी रात, उनके ईष्ट देव ने आदेश दिया कि जहां पानी का स्रोत देखा था, वहीं मेरा स्थान बनाओ। इस आदेश को शिरोधार्य कर श्री गुरु महाराज जी ने प्राचीन काल में ऋषि परशुराम, ऋषि व्यास और ऋषि पाराशर सहित पांडवों और उनकी मां कुंती के साथ जुड़े रहे इस स्थान का चयन किया। दिव्य आदेश के तहत निर्मित आश्रम परिसर में वर्ष 1996 की विजयादशमी (दशहरा) के दिन श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम का निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया। जो 23 अप्रैल 2007 को जनता को समर्पित किया गया।

इसके निर्माण में श्री गुरु महाराज जी का तप और असंख्य भक्तों की कारसेवा का प्रमुख योगदान मिला। श्री गुरुमहाराज जी ने कहा कि इस स्थान को महासागर के महामंथन से प्रकट हुई दिव्य गौ कामधेनु के समान ही समझना चाहिए और यहां विश्वास रखने वालों को अनंत काल तक धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती रहेगी। उनकी पीढ़ियां यहां की कृपा से सुख भोगेंगी।

आज श्री सिद्धदाता आश्रम एक ऐसे आध्यात्मिक कल्पवृक्ष के रूप में हमारे सामने स्थापित है कि जहां दर्शन मात्र से मानस में शांति का वास होने लगता है। यहां कैसा भी संताप लेकर आने वालों को असीम शांति प्राप्त होने लगती है। श्री सिद्धदाता आश्रम में आने वाला कभी खाली हाथ नहीं जाता है- यह श्री गुरु महाराज जी का वचन है।

Sudershanalok_2023_Pages_48-65_sudershanalok 2020 13-Mar-23 10:44 AM Page 51

स्वस्थ व्यक्ति ही सदाचार को ग्रहण करता है

परमपूज्य श्री गुरु महाराज अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के निर्देश पर श्री सिद्धदाता आश्रम में प्रत्येक रविवार निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविरों का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा भी अनेक अवसरों पर बड़े चिकित्सा जांच शिविरों का आयोजन किया जाता है। इनमें सभी प्रमुख पैथियों के चिकित्सक लोगों के स्वास्थ्य की जांच कर रहे हैं। इसके अलावा आश्रम परिसर में एक निशुल्क डिस्पेंसरी का प्रतिदिन संचालन हो रहा है। जिससे प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में लोग लाभ उठा रहे हैं।

Sudershanalok_2023_Pages_48-65_sudershanalok 2020 13-Mar-23 10:44 AM Page 52

Sudershanalok_2023_Pages_48-65_sudershanalok 2020 13-Mar-23 10:44 AM Page 53

संस्कृत और संस्कृति का प्रसार

सनातन धर्म का प्रचार प्रसार बिना संस्कृत के होना संभव नहीं है। इसे ऐसा भी कहा जा सकता है कि बिना संस्कृत के हमारी संस्कृति का सही अर्थ समझाना मुश्किल है। इसी भाव को स्थान देने के उद्देश्य ये श्री सिद्धदाता आश्रम परिसर में स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद-वेदांग संस्कृत महाविद्यालय का संचालन किया जा रहा है। जिसमें सभी छात्रों को निःशुल्क आवास और बोर्डिंग के साथ पूर्णतः निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। इस महाविद्यालय का केंद्र वैदिक ग्रंथों, पुराण, साहित्य, व्याकरण, कर्मकांड (अनुष्ठान प्रथा), ज्योतिष और धर्मशास्त्र आदि विषय तो हैं ही, साथ में हिंदी, अंग्रेजी, गणित, कंप्यूटर एवं विज्ञान के विषय भी बच्चों को पढ़ाए जा रहे हैं। यह महाविद्यालय वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा मान्यता प्राप्त है एवं यहां शास्त्री स्तर तक शिक्षा प्रदान की जा रही है।

Sudershanalok_2023_Pages_48-65_sudershanalok 2020 13-Mar-23 10:44 AM Page 54

पुस्तकालय द्वारा ज्ञान प्रवाह

माना जाता है कि पुस्तकों से अच्छा कोई और मित्र नहीं होता है। ऐसा इसलिए भी कहा जाता है क्योंकि मित्रता एक भाव है जो कम या ज्यादा हो सकता है लेकिन पुस्तकों में ज्ञान है जो हमें प्राप्त होने के बाद, किसी के द्वारा छीना अथवा चोरी नहीं किया जा सकता है। परम पूज्य श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने आश्रम परिसर में स्वामी सुदर्शनाचार्य पुस्तकालय की स्थापना की है, जिसमें सभी प्रमुख संप्रदायों के आध्यात्मिक ग्रंथ, पुराण सहित सकल धार्मिक ज्ञान से ओतप्रोत 12000 पुस्तकों को संकलित किया गया है। इनमें वैदिक विषयक ग्रंथ, भारतीय दर्शन, वेद, पुराण और उपनिषद आदि संकलित हैं।

Sudershanalok_2023_Pages_48-65_sudershanalok 2020 13-Mar-23 10:44 AM Page 55

भोजन प्रसादम् सेवा (अन्नक्षेत्र)

श्री गुरु महाराज जी की उदात्त कृपा एवं निर्देश पर अन्नपूर्णा रसोई प्रतिदिन असंख्य जन को उदरपूर्ति करवा रही है। वैकुंठवासी गुरु महाराज कहते थे कि यहां आए हो तो भोजन अवश्य करके जाना। यही बात भक्तों को यहां भोजन प्रसाद लेने के लिए सर्वाधिक प्रेरित करती है। यह रसोई सभी को महाप्रसाद प्रदान करती है। अन्नपूर्णा रसोई का प्रसाद पाकर भक्त का जीवन पोषित होने लगता है। इस रसोई में रोजाना हजारों की संख्या में भक्तों को भोजन प्रसाद वितरित किया जाता है। यहां एक पंक्ति में एक साथ बैठकर प्रसाद प्राप्त करते भक्त समता का बड़ा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। समतामूलक समाज की स्थापना का यह प्रकल्प बड़ी श्रेष्ठता को स्थापित करता है।

Sudershanalok_2023_Pages_48-65_sudershanalok 2020 13-Mar-23 10:45 AM Page 56

Sudershanalok_2023_Pages_48-65_sudershanalok 2020 13-Mar-23 10:45 AM Page 57

वैकुंठवासी बाबा का स्मृति स्थल

श्री सिद्धदाता आश्रम के संस्थापक वैकुंठवासी गुरु महाराज का समाधि को यहां एक स्मृति स्थल के रूप में स्थापित किया गया है। जो कि यहां आने वाले भक्तों की आस्था का प्रमुख केंद्र है। श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में आने वाले भक्त यहां समाधि पर माथा टेकना नहीं भूलते। यहां सुंदर फल और फूल देने वाले पेड़ लगाए गए हैं। जिससे यहां की सुवास विशिष्ट लगती है। यहां प्राकृतिक वातावरण में बाबा की मनोरम छवियां मन में बनती हैं। यहीं बाबा की याद में संयोजित स्थापित एक सुंदर संग्रहालय भी है। जिसमें बाबा के शारीरिक जीवन में प्रयोग वस्तुओं को दर्शनार्थ रखा गया है।

Sudershanalok_2023_Pages_48-65_sudershanalok 2020 13-Mar-23 10:45 AM Page 58

Sudershanalok_2023_Pages_48-65_sudershanalok 2020 13-Mar-23 10:45 AM Page 59

जनहित सेवा

परम पूज्य अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज की अनुकम्पा एवं मार्गदर्शन में अनेक जनहितकारी सेवा प्रकल्पों को पूर्ण किया जा रहा है। इसमें सेवाभावी भक्तों ने हवन, पौध रोपण, जरूरतमंदों को कंबल, शॉल आदि के वितरण, साफ-सफाई अभियान, जरूरतमंदों को भोजन, ग्रीष्म ऋतु में मीठे पानी की छबीलों के आयोजन, स्वास्थ्य जांच शिविरों के आयोजन आदि में सहभागिता निभाकर अध्यात्म और भौतिकवाद का संयुक्त उपक्रम प्रस्तुत किया है।

Sudershanalok_2023_Pages_48-65_sudershanalok 2020 13-Mar-23 10:45 AM Page 60

सेवा को पुरस्कार

श्री सिद्धदता आश्रम के अधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के निर्देशन में कोरोना महामारी के कारण आम जनमानस में व्याप्त हुए संकट के दौर में भी पीछे कदम नहीं किए और जरूरतमंदों के बीच प्रतिदिन भोजन के पैकेट्स बंटवाए जिससे लाखों की संख्या में लोग लाभान्वित हुए। इसके अलावा आश्रम की ओर से पीएम रिलीफ फंड और सीएम हरियाणा रिलीफ फंड की सहायतार्थ लाखों रुपयों की राशि प्रदान की गई। जिसकी शासन एवं प्रशासन द्वारा मुक्त कंठ से प्रशंसा की गई और आश्रम को पुरस्कृत किया गया।

Sudershanalok_2023_Pages_48-65_sudershanalok 2020 13-Mar-23 10:45 AM Page 61

सेवा ही धर्म

परमपूज्य अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज (अधिपति-श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद) की अनुकम्पा से जरूरतमंदों की राशन, वस्त्र एवं अन्य जरूरत की वस्तुओं द्वारा सेवा करने का प्रकल्प चलाए जाते हैं। इनमें ठंडी ठिठुरती रातों में खुले में सोने वालों को गरमाई प्रदान करने वाले वस्त्रों का वितरण भी बड़ा कार्य है। इसके साथ ही अनेक सरकारी गैरसरकारी अस्पतालों में भर्ती मरीजों को उपयोगी एवं स्वास्थ्यकर भोज्य पदार्थों का वितरण भी किया गया।

Sudershanalok_2023_Pages_48-65_sudershanalok 2020 13-Mar-23 10:45 AM Page 62

गौधन की सेवा

श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज की कृपा से श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा एक विशाल नारायण गौशाला का संचालन किया जाता है जिसमें करीब 300 से अधिक गौवंश आश्रय पाता है। गौशाला में देशी, संकर नस्लों के साथ साथ गीर नस्ल की देशी गायों को भी बड़ी संख्या में रखा गया है। जिनसे प्राप्त समस्त द्रव्य का उपयोग आश्रम में ही किया जाता है और इसका किसी प्रकार का वाणिज्यिक प्रयोग नहीं किया जाता है। श्री गुरु महाराज कहते हैं कि गौ में समस्त देवताओं का वास माना गया है, इसलिए सभी को गौधन की सेवा करनी चाहिए। उनका पूजन करना चाहिए और समस्त चर अचर जगत के प्रति संवेदनशील होना चाहिए।

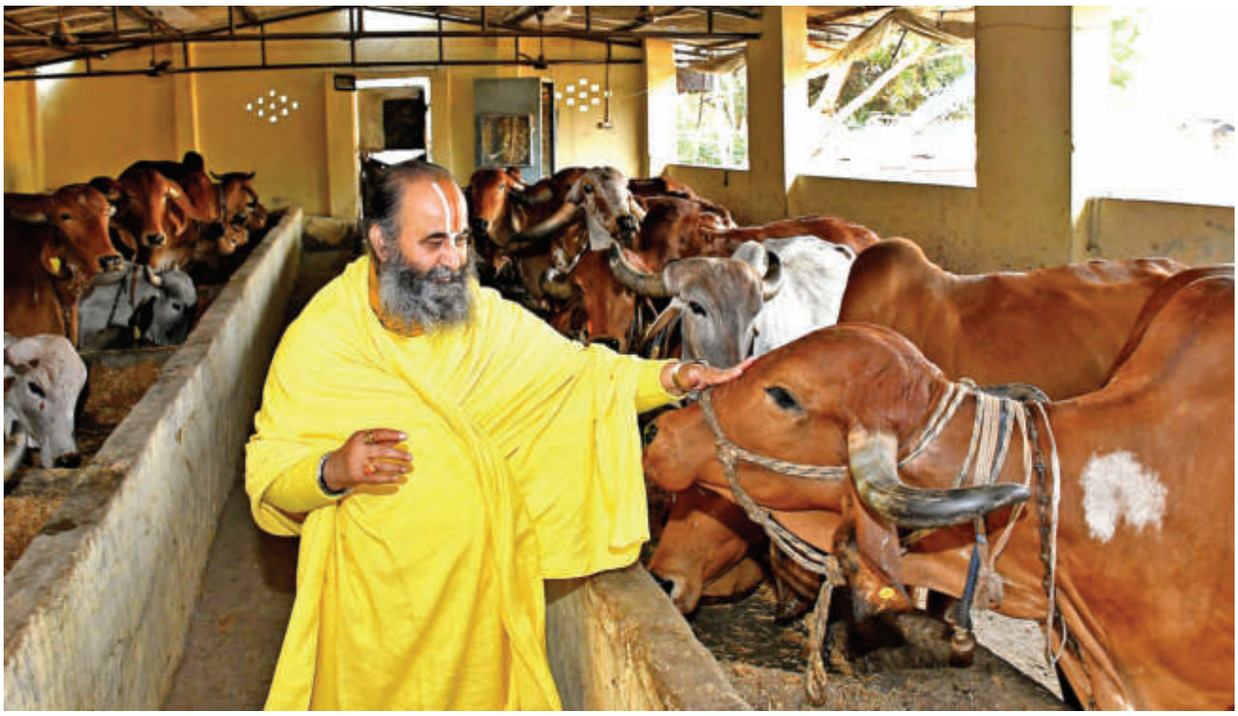

भौतिक तापों से रक्षा करता है गुरुमंत्र

एक शिष्य को गुरु द्वारा प्राप्त मंत्र उसके जीवन के सभी तापों का समन करता है। रामानुज संप्रदाय में तो स्पष्ट मान्यता है कि गुरु मंत्र को प्राप्त कर भाव से जपने वाले को मुक्ति अवश्य ही प्राप्त होती है। गुरुमंत्र के बारे में कहा गया है -गुरुमंत्रो मुखे यस्य तस्य सिद्धयन्ति नान्यथा। दीक्षया सर्वकर्माणि सिद्धयन्ति गुरुपुत्रके।। अर्थात् जिसके मुख में गुरुमंत्र है उसके सब कर्म सिद्ध होते हैं, दूसरे के नहीं। इसी परंपरा को श्री सिद्धदाता आश्रम में आगे बढ़ा रहे परम पूज्य श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज प्रति अनेक नामदान कार्यक्रमों के माध्यमसे भक्तों को दीक्षा प्रदान कर रहे हैं। जिसमें तप्त चक्रांकन के माध्यम से शंख एवं चक्र लगाकर और हवन, यज्ञोपवीत व शरणागति महत्वपूर्ण अंगों को पूर्ण करवाया जाता है।

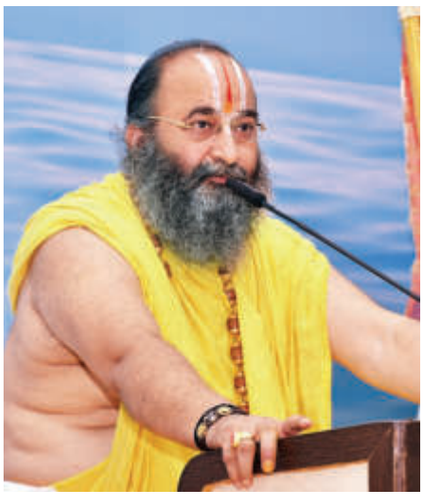

Sudershanalok_2023_Pages_48-65_sudershanalok 2020 13-Mar-23 10:45 AM Page 64

आधुनिक समय की मांग है नवीकरणीय ऊर्जा

दुनिया भर में बढ़ रही ऊर्जा मांग को पूर्ण करने के लिए आज नवीकरणीय ऊर्जा आने वाले समय की मांग है। जिसको आत्मसात करते हुए श्री गुरु महाराज जी ने श्री सिद्धदाता आश्रम में एक विशाल सौर ऊर्जा प्लांट लगवाया है। जो आश्रम की ऊर्जा का बहुत बड़े हिस्से की पूर्ति कर पाने में सक्षम है। शासन प्रशासन की ओर से आश्रम के इस कदम की बड़ी प्रशंसा की गई है। आश्रम की इस पहल के बाद अनेक अन्य संस्थाओं ने भी अपने यहां सौर ऊर्जा प्लांट लगवाए हैं जिससे नवीकरणीय ऊर्जा की संस्थापना एवं प्रयोग बढ़ रहा है। इससे ऐसा माना जा सकता है कि यह परंपरा आगे बढ़ी तो परंपरागत ऊर्जा पर दबाव घटेगा। श्री गुरु महाराज जी कहते हैं कि हमें ऊर्जा का उपयोग सोच समझकर करना चाहिए। वह कहते हैं कि ऊर्जा को उत्पन्न नहीं किया जा सकता है, इसे केवल एक तरह से दूसरी तरह में परिवर्तित किया जा सकता है। इसलिए ऊर्जा का सोच समझकर ही प्रयोग करना चाहिए।

श्री सिद्धदाता आश्रम में लगाये गये सौर उर्जा प्लांट का रिबन काटकर शुभारंभ करते पूज्य गुरुदेव जी व अन्य।

श्री सिद्धदाता आश्रम में लगाये गये सौर उर्जा प्लांट का विहंगम दृश्य।

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:56 AM Page 66

श्री गुरु दर पर आए अतिथि हमारे ...

श्री रामानुज संप्रदाय की उत्तर भारत में ख्याति का प्रमुख केंद्र हरियाणा के फरीदाबाद स्थित श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में वर्ष पर्यंत अति विशिष्ट अतिथियों का निरंतर आवागमन होता है। वह अनंतश्री विभूषित श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के साथ धर्म, दर्शन, समाज पर चर्चाएं करते हैं वहीं अपने जीवन के अनसुलझे पहलुओं को भी सुलझाते हैं। परम पूज्य गुरुदेव के निर्देश अनुसार आश्रम की व्यवस्था हर आने वाले के स्वागत की प्रेरणा देती है। अपने घर आए मेहमान का स्वागत सत्कार एक सुसंस्कृत व्यक्ति के लक्षण कहे जाते हैं। आपके समक्ष हम बीते वर्ष यहां पहुंचे अतिविशिष्ट, विशिष्ट अतिथियों में से कुछ महानुभावों के छायाचित्र संकलित कर प्रस्तुत कर रहे हैं। आप भी अतिथि के आतिथ्य का गुण स्वयं में अर्जित एवं संयोजित करिए। गुरु भगवान आप पर कृपा करें।

विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार जी श्री गुरु महाराज जी जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी से आशीर्वाद लेते हुये।

श्री गुरु महाराज संग श्री प्रकाश पांडे जी, वरिष्ठ आईएएस।

श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद लेते एनएचपीसी के पूर्व सीएमडी श्री अभय कुमार सिंह जी

फरीदाबाद के डिप्टी कमिश्नर श्री जितेन्द्र यादव जी श्री गुरु महाराज जी जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज से आशीर्वाद लेते हुये।

मानव रचना कॉलेज के वाईस चांसलर श्री एनसी वाधवा जी पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद लेते हुये।

हरियाणा सरकार के पूर्व कैबीनेट मंत्री श्री एसी चौधरी जी पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद लेते हुये।

हरियाणा से कांग्रेस के राज्यसभा सांसद श्री दीपेंद्र सिंह हुड्डा जी पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद लेते हुए।

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:49 AM Page 68

हरियाणा स्टेट एनवायरमेंट असेसमेंट अथॉरिटी के चेयरमैन श्री समीरपाल सरो जी पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद लेते हुये।

श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त करतीं वरिष्ठ आईएएस अधिकारी श्रीमती अनीता यादव जी।

आईएएस श्री संजय गर्ग जी सपत्नीक पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

पूज्य गुरुदेव जी संग श्री रमेश गुप्ता जी (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, वीएचपी), श्री कालिदास गर्ग जी व श्री विपिन गोयल जी।

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री राजीव जेटली जी।

श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त करते जेवर से भाजपा विधायक श्री धीरेंद्र यादव जी व श्री वीरेंद्र यादव जी।

पूज्य गुरुदेव संग उच्चतम न्यायालय से सेवानिवृत्त न्यायाधीश इंदिरा बनर्जी जी और हरियाणा एवं पंजाब हाईकोर्ट के पूर्व सहायक अधिवक्ता एवं सुप्रीम कोर्ट में अधिवक्ता विकास वर्मा जी।

पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त करते श्री यतिन खटाना जी नवनियुक्त सिविल जज, राजस्थान साथ में अधिवक्ता श्री राजेश खटाना जी व अन्य।

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:49 AM Page 70

पूर्व वरिष्ठ आइएएस अधिकारी श्री अशोक शर्मा जी संग वरिष्ठ उद्योगपति श्री कैलाश शर्मा जी श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त करते श्रवण कुमार जी (आईआरएस) सपत्नीक।

श्री गुरु महाराज जी संग ब्रह्माकुमारी बहनें।

पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते एसीपी बड़खल श्री सुखवीर सिंह जी संग एसआई मनोज यादव जी।

पूज्य गुरुदेव जी संग श्री जनार्दन त्रिपाठी जी (रजिस्ट्रार, दिल्ली हाई कोर्ट) अपनी धर्मपत्नी संग।

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:49 AM Page 71

श्री अनिल कुमार यादव जी (जॉइंट कमिश्नर, नगर निगम) बल्लभगढ़ सपरिवार जगद्गुरु स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज से आशीर्वाद लेते हुये।

वरिष्ठ पत्रकार श्री बिजेंद्र बंसल जी, श्री सुशील भाटिया जी व सुश्री यशवी गोयल जी।

पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये श्री राजीव कुमार सिंह जी विधायक तारापुर, जिला मुंगेर, बिहार।

मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के न्यायाधीश माननीय श्री राजेंद्र कुमार वर्मा जी (इंदौर बैंच) अपने पुत्र सहित श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए।

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:49 AM Page 72

श्री गुरुदेव महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हरियाणा सीएम फ्लाइंग के डीएसपी श्री राजेश चेची जी व अन्य।

भाजपा हरियाणा के महासचिव श्री संदीप जोशी जी सहपत्नि पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

वरिष्ठ कांग्रेसी नेता श्री जेपी नागर जी साथ में श्री रामसिंह सरपंच जी पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

जगदगुरु स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में श्री कृष्णवीर शर्मा जी।

भाजपा जिलाध्यक्ष श्री गोपाल शर्मा जी।

हरियाणा के पूर्व कैबीनेट मंत्री श्री विपुल गोयल जी पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

पंजाब एंड हरियाणा बार काउंसिल के चैयरमेन श्री मिन्दरजीत यादव जी व अन्य।

विधायक श्री नीरज शर्मा जी, श्री शिवओम मिश्रा जी (प्रभारी स्वच्छ भारत मिशन, अध्यक्ष अखिल भारतीय हिन्दू युवा मोर्चा) व पूर्व भाजपा महिला जिलाध्यक्ष श्रीमती अनीता शर्मा जी व अन्य।

पूज्य गुरुजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए पूर्व आईएएस अधिकारी श्री राजीव रघुवंशी जी।

श्री मनोज ध्यानीजी (पुलिस उप महानिरीक्षक) सीआरपीएफ सहपत्नी पूज्य गुरुजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए।

संस्कार चैनल के सीइओ श्री मनोज जी व डायरेक्टर श्री सुधीर दहिया जी गुरु महाराज जी संग।

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:49 AM Page 74

पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व सहायक महाधिवक्ता श्री वरूण शर्मा जी।

जगद्गुरु स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में दमन दीप से सांसद श्री लालू भाई पटेल जी।

पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त करते पूर्व कांग्रेस विधायक श्री ललित नागर व उनकी टीम।

श्री गुरु महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त करते श्री गौरव अंतिल जी (जॉइंट कमिश्नर, नगर निगम) फरीदाबाद।

कथावाचक श्री राधे राधे बापू जी महाराज।

विश्व हिन्दू परिषद फरीदाबाद का प्रतिनिधिमंडल पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

कथा वाचक श्री कृष्ण कांत द्विवेदी जी संग विजय शंकर चौबे जी पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

कांग्रेस नेता श्री लखन सिंगला जी व श्री कुंवर ओपी भाटी जी पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

फरीदाबाद पत्रकार एसोशिएशन के नवनिर्वाचित सदस्यगण पूज्य गुरुदेव जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये।

समता मूर्ति की स्थापना पर जीयरस्वामी का आभार

हैदराबाद में श्रीरामानुज संप्रदाय के परमाचार्य भाष्यकार रामानुज स्वामी जी की विशाल समता मूर्ति की स्थापना पर हर्ष एवं शुभकामनाएं प्रेषित करने हेतु श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) फरीदाबाद के अधिष्ठाता अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने संप्रदाय के आचार्य श्रीश्रीश्री चिन्ना जीयर स्वामीजी से भेंट की और उन्हें अभिनन्दन पत्र भेंट किया। श्री जीयर स्वामी जी के अथक प्रयास से 216 फुट ऊंची यह प्रतिमा हैदराबाद में स्थापित की गई है जिसे दुनिया की दूसरी सबसे ऊंची बैठी मूर्ति की संज्ञा दी गई है। इसका लोकार्पण भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने किया है।

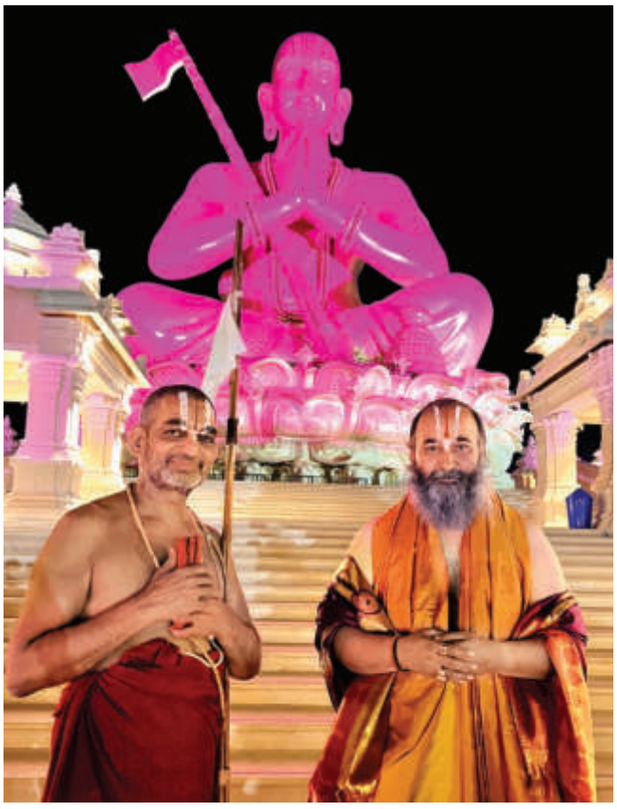

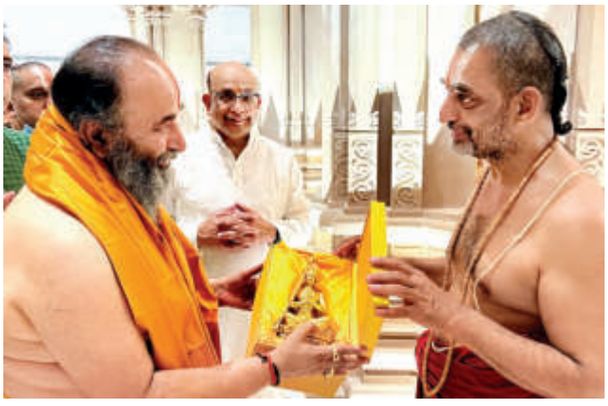

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:49 AM Page 77

श्री गुरुमहाराज जी का संत विभूतियों संग मिलन

साधारण व्यक्ति को जब तत्वदर्शी महापुरुषों की संगति प्राप्त होती है तब उन्हें परमपिता परमात्मा की याद आती है। इसी को सतसंगति कहा गया है। लेकिन जब तत्वदर्शी विभूतियों का मिलन होता है तब मानव के लिए विशेष आयोजन होता है। बीते वर्ष श्री सिद्धदाता आश्रम व आश्रम के बाहर कार्यक्रमों में श्री गुरुमहाराज जी अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जीमहाराज की अनेक सन्त-महात्माओं के साथ भेंट व धर्म चर्चा हुई।

श्री गुरु महाराज जी जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी के संग श्री सिद्धदाता आश्रम फरीदाबाद में श्री बागेश्वर धाम पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री जी महाराज।

श्री स्वामी राघवेंद्राचार्य जी महाराज (अध्यक्ष, श्री वेंकटेश देवस्थान न्यास) मंदिर श्री मुरली मनोहर जी, जयपुर।

ऋषिकेश से आये महंत मृत्युंजय तीर्थ जी महाराज।

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:49 AM Page 78

पंचकूला से पधारे स्वामी श्री सम्पूर्णानन्द ब्रह्मचारी जी महाराज को स्मृति चिन्ह भेंट करते पूज्य गुरुदेव जी।

मध्य प्रदेश से आये अनन्त श्री विभूषित 1008 श्री रविशंकर जी महाराज (श्री रावतपुरा सरकार जी)।

स्वामी श्री विवेकरत्न स्वामी जी साथ में श्री मणिवत्सय स्वामी जी, अक्षरधाम मंदिर दिल्ली।

श्रीराम सेवा आश्रम, केशवधाम वृन्दावन से पूज्य श्री प्रहलाद जी महाराज संग पूज्य ज्योतराम जी महाराज व श्री अनन्ताचार्य जी पूज्य गुरुदेव जी से शिष्टाचार भेंट करते हुये।

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:49 AM Page 79

प्रवास में श्री गुरु महाराज जी

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) फरीदाबाद के अधिष्ठाता अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज 1- पुणे (महाराष्ट्र) यात्रा के दौरान सदशिष्य बागु मुखी के पुत्र प्रणव संग सुचेता के शुभ विवाह अवसर पर नवविवाहित जोड़े एवं परिजनों को आशीर्वाद देते हुए। 2- श्री गुरु महाराज जी का हवाई अड्डे पर स्वागत करने पहुंचे सदशिष्य परिवार। 3, 4- गुरु भक्त श्री बागु मुखी, श्री ओजी जी परिवार ने अपने निवास स्थान पर पूज्य गुरुदेव का पूजन, चरण वंदना कर आशीर्वाद प्राप्त किया। 5, 6- नाइजीरिया में रहने वाले सदशिष्य परिवार श्री महेश एवं भाविका वासवानी जी की बेटी वंदना की गोआ के डब्ल्यू होटल में पवन शाह संग आयोजित विवाह समारोह में पहुंचकर नव दंपति एवं परिजनों को आशीर्वाद प्रदान किया। 7- भाजपा नेता एवं भोजपुरी गायक श्री मनोज तिवारी जी ने श्री गुरु महाराज जी से मुलाकात कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस दौरान उन्होंने देश, धर्म, समाज के अनेक मुद्दों पर चर्चा की। 8- भोजपुरी कलाकार एवं भाजपा सांसद श्री रविकिशन जी ने भी श्री गुरु महाराज के दर्शन प्राप्त कर आशीर्वाद लिया और सनातन संस्कृति आदि अनेक विषयों पर चर्चा में भागीदारी की। 9- इस प्रवास के दौरान इंडियन कोस्ट गार्ड के डिप्टी डायरेक्टर जनरल श्री देव राज जी ने भी श्री गुरु महाराज जी से भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। श्री गुरु महाराज जी ने सदशिष्य परिवार श्री महेश एवं भाविका वासवानी जी के निवास स्थान पर लोककल्याण के लिए यज्ञ कर प्रार्थना भी की। 10, 11, 12, 13, 14 - गोवा प्रवास के अवसर पर समुद्र तटों एवं शिष्य परिवारों के आतिथ्य में परम पूज्य श्री गुरु महाराज जी ने अनेक भक्तों को सेवा का अवसर प्रदान किया। इससे सभी बड़े ही प्रफुल्लित नजर आए और उन्होंने पुनः पुनः उनके यहां चरण डालने का आग्रह किया।

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:49 AM Page 80

3

4

5

6

7

8

9

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:49 AM Page 81

10

11

12

13

14

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:49 AM Page 82

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:49 AM Page 83

नवसंकल्प का पर्व

परम पूज्य गुरुदेव अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के जन्मोत्सव पर्व और ग्रेगेरियन नववर्ष 2022 के स्वागत के लिए श्री सिद्धदाता आश्रम परिसर में विशाल समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में भक्तों ने पहुचंकर श्री गुरुमहाराज को जन्मोत्सव की बधाई एवं शुभकामनाएं दीं और स्वयं भी नववर्ष के लिए आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर पूज्यपाद गुरुदेवजी ने भी दिन का प्रारंभ श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में भगवान श्री लक्ष्मीनारायण जी एवं अन्य देव विग्रहों के समक्ष अर्चना कर एवं स्मृति स्थल पर वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी की समाधि पर लोककल्याण के लिए प्रार्थना से की।

पूज्य गुरुदेव जी का जन्मोत्सव एवं नववर्ष उत्सव, 01 जनवरी, 2022

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:50 AM Page 84

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:50 AM Page 85

फूलों और गुलाल संग खेली होली

परमपूज्य पीठाधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम श्री सिद्धदाता आश्रम में भगवान श्री लक्ष्मीनारायण, देव विग्रहों एवं वैकुंठवासी गुरु महाराज और भक्तों संग फूलों की होली खेली। उन्होंने सभी को स्नेह स्वरूप प्रवचन एवं आशीष और प्रसाद प्रदान किया। आश्रम में सर्वप्रथम विशाल हवन का आयोजन किया गया और उसके बाद अन्य कार्यक्रम विधिवत आयोजित हुए।

- होली 17-18 मार्च, 2022

मर्यादापुरुषोत्तम रामजी का जन्मोत्सव (रामनवमी)

भगवान के समस्त अवतारों में मर्यादा के लिए पूजे जाने वाले पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचंद्र जी महाराज का जन्मोत्सव कार्यक्रम श्री लक्ष्मी नारायण दिव्यधाम, श्री सिद्धदाता आश्रम में सविधि और मर्यादा में मनाया गया। परम पूज्य अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के निर्देशन में भगवान श्रीराम जी के श्रीविग्रह पर सविधि पूजन किया गया। इस अवसर पर अर्चक, भक्त , सेवादार एवं आश्रम कार्यकारिणी के सदस्यों ने मर्यादा में रहने का विशेष पाठ सीखने का प्रयास किया।

- श्री राम नवमी 10 अप्रैल, 2022

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:50 AM Page 87

भक्त शिरोमणि श्री हनुमान जयंती

महादेव के अंशावतार भक्त शिरोमणि श्री हनुमान जी की जयंती हमारे परम पूज्य अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के सान्निध्य में विधि विधान से संपन्न हुई। इस अवसर पर श्री लक्ष्मी नारायण दिव्यधाम में विशेष पूजा-अर्चना का आयोजन हुआ। इस अवसर पर श्री गुरु महाराज जी ने उन्हें भक्त शिरोमणि बताया और भक्तों को उनसे सीख लेने की बात कही। उन्होंने कहा कि हमारे धर्मग्रंथों में हनुमान जी और श्री लक्ष्मण जी से बढ़कर सेवक कोई और नहीं बताया गया है। उसमें भी लक्ष्मण जी का भाई का नाता है, जबकि हनुमान जी का केवल भक्त का नाता है। इसलिए उन्हें श्रेष्ठ माना गया है।

- श्री हनुमान जयंती 16 अप्रैल, 2022

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:50 AM Page 89

पंचदशम् ब्रह्मोत्सव

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम श्री सिद्धदाता आश्रम का पांच दिवसीय 15वां श्री ब्रह्मोत्सव श्री रामानुज परंपरा अनुसार मनाया गया। समस्त विधि विधान दिव्यधाम के अधिष्ठाता अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज द्वारा संपन्न करवाए गए। इस अवसर पर उन्होंने समस्त अर्चकों, वेद छात्रों एवं सेवादारों को आश्रम की कीर्ति को अक्षुण्ण बनाए रखने में सहयोग की बात कही। उन्होंने कहा कि आपके व्यक्तित्व से दिव्यधाम का आंकलन किया जाता है। इसलिए अपने चरित्र का स्तर ऊंचा रखें।

चतुर्दशम् ब्रह्मोत्सव - 03 से 07 मई, 2022

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:50 AM Page 90

भाष्यकार रामानुज भगवान की जयंती

श्री रामानुज संप्रदाय के महान संत भाष्यकार रामानुज स्वामी जी की जयंती श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में विशेष व्यवस्था के साथ मनाई गई। इस अवसर पर अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने बताया कि पूर्व में श्री संप्रदाय और तदनुसार आचार्य संप्रदाय के नाम से विख्यात हमारी परंपरा के वैभव को भाष्यकार भगवान श्री रामानुज स्वामी जी ने इतना संवर्धित किया कि संप्रदाय को उनके ही नाम से जाना जाने लगा। उन्होंने प्रस्थानत्रयी की टीका कर मानव जाति को महान आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान किया। इस अवसर पर भाष्यकार स्वामी जी के उत्सव विग्रह की शोभायात्रा भी निकाली गई।

- श्री रामानुज जयंती 06 मई, 2022

Sudershanalok_2023_Pages_66-91_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:50 AM Page 91

धूमधाम से मनाई श्रीनृसिंह जयंती

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम, श्री सिद्धदाता आश्रम में भगवान नारायण के नृसिंह अवतार के अवतरण दिवस का विशेष आयोजन हुआ। इस अवसर पर श्री नृसिंह भगवान के दिव्य विग्रहों का पूजन परमपूज्य गुरुदेव अनंतश्री विभूषित श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने किया। श्री गुरु महाराज जी ने लोककल्याण के लिए भगवान श्रीनृसिंह जी से प्रार्थना की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भगवान का यह अवतार सबसे कम अवधि का हुआ है, जो केवल अपने भक्त की प्राण रक्षा एवं उसके विश्वास को स्थापित करने के लिए हुआ है। हमें भगवान पर अंत समय तक भी विश्वास रखना चाहिए। वह कभी भी अपने भक्त को निराश नहीं करते हैं।

- श्री नृसिंह जयंती 14 मई, 2022

Sudershanalok_2023_Pages_92-116_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:58 AM Page 92

Sudershanalok_2023_Pages_92-116_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:58 AM Page 93

महान तपस्वी श्री गुरु महाराज जी की पुण्यतिथि

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम, श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद की स्थापना करने वाले महान तपस्वी संत एवं श्री रामानुज परंपरा में जगदगुरु प्रतिष्ठित वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की पुण्यतिथि कोराना प्रोटोकाल के कारण बड़ी सादगी के साथ मनाई गई। इस अवसर पर पूज्यपाद गुरुदेव अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने वैकुंठवासी गुरु महाराज के विग्रह का पूजन किया।

वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की पुण्यतिथि, 22 मई, 2022

Sudershanalok_2023_Pages_92-116_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:58 AM Page 94

Sudershanalok_2023_Pages_92-116_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:58 AM Page 95

वै. बाबा की जयंती एवं आश्रम स्थापना दिवस

वर्ष 1989 में फरीदाबाद से होकर गुजरने वाली अरावली पर्वतमाला पर श्री सिद्धदाता आश्रम की स्थापना करने वाले वैकुंठवासी गुरु महाराज स्वामी सुदर्शनाचार्य जी की जयंती एवं आश्रम स्थापना दिवस हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आनंदोत्सव के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर अधिष्ठाता अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने बाबा के स्मृति स्थल एवं दिव्यधाम में स्थापित श्रीविग्रह का विशेष उपचार से अभिषेक पूजन अर्चन किया गया।

वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की जयंती (आनंदोत्सव), 27 मई, 2022

आचार्य पूजन (श्री व्यास पूर्णिमा)

अध्यात्म के क्षेत्र में गुरु पूर्णिमा का स्थान सभी पर्वों से ऊपर माना जाता है। इस वर्ष यह पर्व 24 जुलाई को था। इस अवसर पर श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम, श्री सिद्धदाता आश्रम को विशेष रूप से सजाया गया था। इस अवसर पर भक्तों ने अधिपति श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज का पूजन किया और उनसे अपनी भूलों के लिए क्षमा प्रार्थना की। इस अवसर पर श्री गुरु महाराज ने सभी को अपने जीवन में लक्ष्य बनाने और गुरु की सीख को अपने जीवन में स्वीकार करने के लिए संदेश दिया।

श्री गुरु पूर्णिमा, 13 जुलाई, 2022

श्रीगुरुमाता जी की तृतीय पुण्यतिथि

वैकुंठवासी गुरु महाराज जी की भार्या, आश्रम के अधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज जी की माता जी एवं हम सभी गुरु भक्तों की गुरुमाता श्रीमती अशरफी देवी जी की द्वितीय पुण्यतिथि के अवसर पर श्री सिद्धदाता आश्रम के सत्संग भवन में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री गुरु महाराज जी एवं अन्य ने श्रीगुरुमाता जी के बारे में अपने विचार रखे और श्रद्धासुमन अर्पित किए।

07 अगस्त, 2022

धूमधाम के साथ मनाई श्रावण शिवरात्रि

माता पार्वती के माध्यम से संसार को गुरु के प्रति आचार विचार बताने वाले महादेव शिव के नीलकंठ बनने की जयंती श्री सिद्धदाता आश्रम परिसर में स्थित श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम में धूमधाम के साथ मनाई गई। श्रावण शिवरात्रि के इस पर्व पर आश्रम के अधिपति श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने वैदिक रीति से भगवान शिव के मूर्त रुप का महाभिषेक किया। उन्होंने महादेव के श्रीविग्रह के समक्ष संसार के कल्याण के लिए प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि सभी को भगवान भोले जैसा भोलापन रखना चाहिए लेकिन संसार की रक्षा के लिए नीलकंठ बनने (त्याग) के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

श्रावण शिवरात्रि, 26 जुलाई, 2022

Sudershanalok_2023_Pages_92-116_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:59 AM Page 102

Sudershanalok_2023_Pages_92-116_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:59 AM Page 103

नन्द के आनन्द भयो, जय कन्हैया लाल की

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) में हमेशा ही विशिष्ट रहा है। इस बार भी सुंदर रोशनी में नहाया दिव्यधाम एवं आश्रम अद्भुत लग रहा था। इस अवसर पर आश्रम के अधिपति श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने भगवान श्रीकृष्ण के अवतरण की वैदिक विधि निभाई और भक्तों को अपना संदेश दिया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में भक्त यहां पहुंचे और ऑनलाइन माध्यमों से भी लाखों लोगों ने प्रसारण देखा।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव, 19 अगस्त, 2022

Sudershanalok_2023_Pages_92-116_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:59 AM Page 105

आद्या शक्ति का आराधना दिवस (दशहरा)

श्री सिद्धदाता आश्रम में आद्या शक्ति की आराधना का पर्व नवरात्र परंपरा अनुसार मनाया गया। यहां नवरात्र के दिनों में विशेष अनुष्ठान का आयोजन किया जिसमें सभी दिन सविधि पूजन का आयोजन किया गया और दशहरा अर्थात् विजयादशमी के पर्व के उपलक्ष्य में परमपूज्य गुरुदेव अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने हवन किया।

दशहरा पर्व, 04 अक्टूबर, 2022

दान की अक्षुण्ण परंपरा

वैसे तो दान का महत्व हर क्षण होता है लेकिन कहा जाता है कि कार्तिक मास में किए दान का सर्वाधिक फल होता है। कार्तिक मास में श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में वर्षों से दान की परंपरा को निभाते हुए अधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने अर्चकों एवं सेवादारों मिठाई, वस्त्र प्रदान किए।

हर्ष उल्लास के साथ मनाई दीपावली

हम दीपावली हर वर्ष मनाते हैं और बड़े उल्लास के साथ इसका आयोजन करते हैं। विशेष रूप से प्रकाश का पर्व दीपावली हजारों दीपकों एवं झड़ियों के साथ मनाया जाता है। लेकिन इस वर्ष का प्रकाश अद्वितीय रहा। पूरे आश्रम परिसर को हजारों दीपों की दीपमालिका से सजाया गया। जिससे यहां की छटा देखते ही बनती थी। इस अवसर पर श्री गुरु महाराज ने लोक कल्याण के लिए वैदिक परम्परा अनुसार देवी माँ श्री लक्ष्मी व श्री गणेश भगवान् का सविधि पूजन किया। इस सजावट का लाखों भक्तों ने सोशल मीडिया माध्यमों के जरिए लाइव आनन्द प्राप्त किया।

दीपावली महोत्सव, 24 नवंबर, 2022

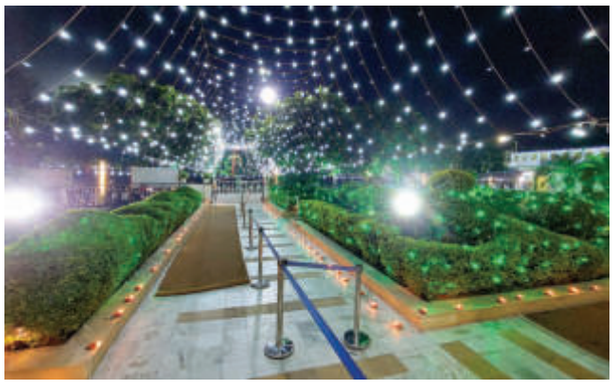

Sudershanalok_2023_Pages_92-116_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:59 AM Page 108

Sudershanalok_2023_Pages_92-116_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:59 AM Page 110

सविधि संपन्न हुआ श्री गोवर्धन पूजन

भगवान श्रीकृष्ण ने मद में डूबे देवराज इन्द्र का अभिमान तोड़कर गोप गोपियों की रक्षा की और प्रकृति का महत्व जनमानस को बताया। इसी अवसर को श्री गोवर्धन पूजन के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष भी श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम, श्री सिद्धदाता आश्रम में गोवर्धन पूजा का त्यौहार बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्रीगुरु महाराज जी ने विधिवत पूजा अर्चना की और उपस्थित श्रद्धालओं को आशीर्वाद एवं प्रसाद किया। उन्होंने श्री गोवर्धन महाराज की पूजा के उपरांत परिक्रमा की। उन्होंने कहा कि हमें प्रकृति को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहिए और वृक्ष अवश्य ही लगाने चाहिए।

श्री गोवर्धन पूजन, 26 नवंबर, 2022

गोपाष्टमी पर्व पर गौधन पूजन

इस वर्ष भी श्री गोपाष्टमी का पर्व श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा संचालित श्री नारायण गौशाला में पूरी विधि विधान के साथ मनाया गया। इस अवसर पर हमारे अधिष्ठाता अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने गौवंश का पूजन किया और उन्हें हरा चारा, गुड़ आदि प्रदान किया। श्री गुरु महाराज ने उपस्थित भक्तों एवं सेवादारों को गौ सेवा करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि गौ ही ऐसा प्राणी है जिससे प्राप्त हर चीज हमारे जीवन में उपयोगी है। हमें यथासम्भव गौ पालन, गौ सेवा करनी चाहिए।

गोपाष्टमी पर्व, 01 नवंबर, 2022

Sudershanalok_2023_Pages_92-116_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:59 AM Page 112

गीता जयंती में श्री सिद्धदाता आश्रम ने की भागीदारी

जिला प्रशासन द्वारा आयोजित गीता जयंती महोत्सव की शुरुआत हवन के साथ हुई। इस हवन को स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद वेदांग संस्कृत महाविद्यालय के आचार्यों एवं वेदपाठियों द्वारा संपन्न कराया गया। मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर एवं हरियाणा के कैबिनेट मंत्री मूलचंद शर्मा एवं अन्य अतिथियों एवं अधिकारियों का आश्रम के प्रदर्शनी स्टॉल पर भव्य स्वागत किया गया। कार्यक्रम के अंतिम दिन श्री सिद्धदाता आश्रम की झांकी की सभी ने बहुत प्रशंसा की। महोत्सव में मुख्य अतिथि विधायक श्रीमती सीमा त्रिखा से सम्मानित होने के बाद आश्रम पहुंचे जत्थे को श्री गुरु महाराज जी ने भी आशीर्वाद दिया और स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद वेदांग संस्कृत महाविद्यालय के आचार्यों एवं वेदपाठियों के साथ गीता के श्लोकों का सस्वर पाठ करते हुए आश्रम की परिक्रमा की।

गीता जयंती महोत्सव, 02 से 04 दिसंबर, 2022

Sudershanalok_2023_Pages_92-116_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:59 AM Page 114

इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा से श्री सिद्धदाता आश्रम फरीदाबाद पहुंचने का मार्ग

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से श्री सिद्धदाता आश्रम फरीदाबाद पहुंचने का मार्ग

Sudershanalok_2023_Pages_92-116_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:59 AM Page 115

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम)

मुख्य पर्व एवं अन्य कार्यक्रम-2023

01 - 01 - 2023	ज.गु.रा. स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी का जन्मदिवस एवं नववर्ष उत्सव
26 - 01 - 2023	बसंत पंचमी
18 - 02 - 2023	महाशिवरात्रि
06 - 03 - 2023	होली महोत्सव
07 - 03 - 2023	होली रंगवाली
30 - 03 - 2023	श्रीरामनवमी
06 - 04 - 2023	श्रीहनुमान जयंती
25 - 04 - 2023	स्वामी श्री रामानुजाचार्य जयंती
27 - 04 - 2023	ब्रह्मोत्सव रथयात्रा
04 - 05 - 2023	श्रीनृसिंह जयंती
22 - 05 - 2023	वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य महाराज जी की पुण्यतिथि
27 - 05 - 2023	वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य महाराज जी की जयंती एवं आश्रम का स्थापना दिवस (आनंदोत्सव)
03 - 07 - 2023	गुरु पूर्णिमा
15 - 07 - 2023	श्रावण शिवरात्रि
30 - 08 - 2023	रक्षाबंधन
07 - 09 - 2023	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
15 - 10 - 2023	शारदीय नवरात्र प्रारभ
23 - 10 - 2023	आश्रम का दशहरा पर्व
12 - 11 - 2023	दीपावली
13 - 11 - 2023	अन्नकूट गोवर्धन पूजा
20 - 11 - 2023	गोपाष्टमी पर्व

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

श्री सिद्धदाता आश्रम

समय सारणी

1 नवम्बर से 28 फरवरी शीत काल

प्रातः	5.30 से 6:00 बजे	मंगला आरती
प्रातः	6:00 से 7:00 बजे	आराधना
प्रातः	7:00 से 7:15 बजे	अर्चना
प्रातः	7:15 से 7:30 बजे	बाल भोग
प्रातः	7:30 से 8:00 बजे	श्रृंगार व आरती
प्रातः	8:00 से 11:45 मध्याह्न	दरबार / देव दर्शन
मध्याह्न	11:45 से 12:15 बजे	आराधना व राजभोग
मध्याह्न	12:15 से 1:00 बजे	दरबार /देव दर्शन
मध्याह्न	1:00 से 4:00 बजे	विश्राम
सायं	4:00 से 5:15 बजे	दरबार/ देव दर्शन
सायं	5:15 से 5:45 बजे	आराधना
सायं	5:45 से 6:10 बजे	अर्चना
सायं	6:10 से 6:30 बजे	राजभोग
रात्रि	6:30 से 8:15 बजे	आरती व दर्शन
रात्रि	8:15 से 8:30 बजे	शयन भोग व दर्शन
रात्रि	8:30	विश्राम

2 मार्च से 31 अक्टूबर ग्रीष्म काल

प्रातः	5.30 से 6:00 बजे	मंगला आरती
प्रातः	6:00 से 7:00 बजे	आराधना
प्रातः	7:00 से 7:15 बजे	अर्चना
प्रातः	7:15 से 7:30 बजे	बाल भोग
प्रातः	7:30 से 8:00 बजे	श्रृंगार व आरती
प्रातः	8:00 से 11:45 मध्याह्न	दरबार / देव दर्शन
मध्याह्न	11:45 से 12:15 बजे	आराधना व राजभोग
मध्याह्न	12:15 से 1:00 बजे	दरबार /देव दर्शन
मध्याह्न	1:00 से 4:00 बजे	विश्राम
सायं	4:00 से 6:15 बजे	दरबार/ देव दर्शन
सायं	6:15 से 6:45 बजे	आराधना
सायं	6:45 से 7:10 बजे	अर्चना
सायं	7:10 से 7:30 बजे	राजभोग
रात्रि	7:30 से 8:45 बजे	आरती व दर्शन
रात्रि	8:45 से 9:00 बजे	शयन भोग व दर्शन
रात्रि	9:00	विश्राम

आश्रम द्वारा संचालित गतिविधियां

- स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद वेदांग संस्कृत महाविद्यालय
- नारायण गौशाला
- पुस्कालय
- अतिथि गृह
- सत्संग भवन
- यज्ञशाला
- औषधालय
- भोजनालय

आश्रम में निम्न लिखित कार्य वर्जित हैं

- धूम्रपान करना
- मदिरापान करना
- अस्त्र/शस्त्र लाना
- चमड़े की वस्तु लाना
- जूते व चप्पल लाना
- मन्दिर में फोटो खींचना

प्रातः 8:00 बजे चाय व गोष्ठी प्रसाद
दिन में भोजन का समय 1:00 बजे
सायं 5:00 बजे चाय प्रसाद
रात्रि में भोजन का समय 8:00 बजे

नोट : मन्दिर खुलने के समय ही प्रवेश की अनुमति है

विशेष : अपने वाहन व सामान की सुरक्षा स्वयं करें।

Sudershanalok_2023_Pages_92-116_sudershanalok 2021 13-Mar-23 10:59 AM Page 116